आसमानी फ़ैसला

(ईश्वरीय निर्णय)

लेखक
मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह व महदी अलैहिस्सलाम

आसमानी फ़ैसला

(ईश्वरीय निर्णय)

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह व महदी अलैहिस्सलाम

آسمانی فیصلہ

आसमानी फ़ैसला

लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

अनुवादक : ***अलीहसन*** *एम.ए.एच.ए*

संख्या : 1000

प्रथम संस्करण : हिन्दी

वर्ष : 2013 ई.

प्रकाशक : नज़ारत नश्र व इशाअत, क़ादियान

प्रेस : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान (143516)

ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)

ISNB: 978-81-7912-362-1

ٹائیٹل بار اوّل

جاء الحق وزهق الباطل ان الباطل كان زهوقا

هٰذا الذی کنتم بہٖ تستعجلون

(یہ وہی ہے جس کے لئے تم جلدی کرتے تھے)

میاں نذیر حسین صاحب دہلوی اور اُن کے شاگرد بٹالوی کو جو مؤلف رسالہ ہذا صاحب کتب ازالۂ اوہام و توضیح مرام

کو کافر اور دجال اور کذّاب اور ملحد اور بے ایمان اور ملعون اور دور از رحمتِ رحمٰن ٹھہراتے ہیں اور

ایسا ہی اُن کے تمام ہمخیالوں مولویوں صوفیوں پیرزادوں فقیروں سجّادہ نشینوں

کو آسمانی فیصلہ کی طرف دعوت اور نیز اُنکے گذشتہ مباحثات کی کیفیت

والحمد للہ والمنّت کہ یہ رسالہ موسومہ

آسمانی فیصلہ

مطبع ریاض ہند امرتسر میں چھپا

ایک ہزار جلد فی سبیل اللہ تقسیم کیگئی ہے

प्राक्कथन

आसमानी फैसला

जब गुरुओं के गुरु कहे जाने वाले हिन्दुस्तान के चोटी के मौलवी मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी तथा अन्य उलमाओं ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन और मृत्यु के विषय पर हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी से बहस करने से इनकार किया और हज़रत मिर्ज़ा साहिब को काफिर कहने से न रुके तो हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने दिसम्बर 1891 ई. में ''आसमानी फ़ैसला'' नामक एक किताब कलमबद्ध की । जिसमें उपरोक्त उलमाओं द्वारा दिए गए कुफ्र के फ़त्वे की वास्तविकता बयान करते हुए समस्त उलमाओं, सज्जाद: नशीनों और विशेष तौर पर मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब को जो गुरुओं के गुरू कहलाने के कारण दूसरों की अपेक्षा अधिक मशहूर थे, इत्यादि को आसमानी निशान दिखाने के लिए आमन्त्रित किया और उनको संबोधित करते हुए कहा कि सच्चे और पक्के मोमिन के संबंध में क़ुरआन और हदीस द्वारा बताई गई निशानियों में मुझ से मुक़ाबला करें । लेकिन किसी को मुक़ाबले के लिए आपके सामने आने की हिम्मत न हुई ।

इसी तरह हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी म'हूद अलैहिस्सलाम ने बैअत के उद्देश्यों का वर्णन करते हुए बार-बार आकर मुलाक़ात करने और संगति में रहने के उद्देश्य के अलावा रूहानी बातों के सुनने सुनाने के लिए वर्ष में तीन दिन जलसे के निर्धारित करके उसमें हाज़िर होने को आमंत्रित किया । जिसके लिए हुज़ूर ने 26, 27 और 28 दिसम्बर की तिथियाँ निर्धारित कीं ।

अन्त में पाठकों से निवेदन है कि इस पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और हुज़ूर के द्वारा बताई गई शिक्षाओं के अनुसार यथाशक्ति अपना जीवन गुज़ारें ।

प्रकाशन विभाग क़ादियान, हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया पंचम की मंज़ूरी से पहली बार इस किताब के हिन्दी प्रकाशन का सौभाग्य पा रहा है । इस किताब का हिन्दी अनुवाद आदरणीय मौलाना अलीहसन साहिब एम. ए. ने किया है । अल्लाह तआला उन्हें प्रतिफल प्रदान करे । अन्त में अल्लाह तआला से दुआ है कि इस किताब को पाठकों के सन्मार्ग प्राप्ति का साधन बनाए । आमीन !

भवदीय
अध्यक्ष प्रकाशन विभाग
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

بسم اللّٰہ الرَّحمٰن الرَّحیم

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ

لَنۡ یَّجۡعَلَ اللّٰہُ لِلۡکَافِرِیۡنَ عَلَی الۡمُؤۡمِنِیۡنَ سَبِیۡلًا

[اے خداوند رہنمائے جہان
صادقاں را زِ کاذبانِ بُرہان]

[آتش افتاد درجہان ز فساد
الغیاث اے مغیث عالمیان ①]

मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब के फ़त्वे की वास्तविकता और उनकी झूठी सफलता की मूल वास्तविकता और उनको और उनके समान विचारधारा रखने वाले लागों को आसमानी निर्णय की ओर आमन्त्रण

मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी हालाँकि स्वयं भी क़ुफ्र के फ़त्वों से बचे हुए नहीं हैं और यों भी हिन्दुस्तान में सर्वप्रथम काफ़िर वही ठहराए गये हैं फिर भी उनको दूसरे मुसलमानों को काफ़िर बनाने का इतना जोश है कि जैसे सदात्मा लोगों को मुसलमान बनाने को शौक़ होता है। वे इस बात के बड़े ही इच्छुक होते हैं कि किसी मुसलमान पर अकारण क़ुफ्र का फ़त्वा लग जाए चाहे क़ुफ्र का एक भी कारण न पाया जाए और उनके आज्ञाकारी शिष्य मियाँ मुहम्मद हुसैन बटालवी जो शेख़ कहलाते हैं उन्हीं के पद् चिन्हों पर चले हैं बल्कि शेख़ जी तो कुछ अधिक जोश और फ़त्वा देने की रुचि में अपने गुरू से भी कुछ बढ़-चढ़ कर हैं। इन दोनों गुरू-शिष्य की धारणा यह

① हे संसार को हिदायत देने वाले ख़ुदा! सच्चों को झूठों की क़ैद से मुक्त कर। उपद्रव के कारण संसार में आग लग गई, हे लोगों की फरियाद सुनने वाले! सहायता को पहुँच। (अनुवादक)

ज्ञात होती है कि अगर निन्यानवे कारण ईमान के खुले-खुले उनकी दृष्टि में पाए जाएँ और एक ईमानी कारण उनको अपनी संकीर्णता के कारण समझ में न आए तो फिर भी ऐसे आदमी को काफ़िर कहना ही ठीक है। अत: इस विनीत के साथ भी उन साहिबों ने ऐसा ही व्यवहार किया। जो व्यक्ति इस विनीत की रचनाएँ **बराहीन-अहमदिया और सुर्मा-चश्म आर्य:** इत्यादि को ध्यानपूर्वक पढ़ेगा उस पर पूर्णत: स्पष्ट हो जायेगा कि यह विनीत किस निष्ठा के साथ इस्लाम धर्म का सेवक है और **हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम** की महानताओं को फैलाने में कितना लीन है, परन्तु फिर भी मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब और उनके शिष्य बटालवी ने सब्र न किया जब तक इस विनीत को क़ाफ़िर न ठहरा दिया। मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब की दशा बहुत ही खेदजनक है कि इस बुढ़ापे में कि क़ब्र में पैर लटका रहे हैं फिर भी अपने अंजाम की कुछ भी परवाह न की और इस विनीत को क़ाफ़िर ठहराने के लिए ईमानदारी और तक़्वा (संयम) को पूर्णतया हाथ से छोड़ दिया और मौत के किनारे तक पहुँच कर अपनी मानसिकता का बहुत ही बुरा नमूना दिखाया। ख़ुदा से डरने वाले, धार्मिक और परहेज़गार विद्वानों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि जब तक उनके हाथ में किसी के काफ़िर ठहराने के लिए ऐसे ठीक-ठीक पूर्णत: सच्चे प्रमाण न हों कि जिन बातों के आधार पर उस पर क़ुफ्र का दोष लगाया जाता है और क़ुफ्र के इल्ज़ाम को सिद्ध करने वाली उन बातों को वह स्वयं अपने मुँह से स्पष्ट तौर पर स्वीकार करे, अपितु इन्कार न करे, तब तक ऐसे व्यक्ति को काफ़िर बनाने में जल्दी न करें, परन्तु देखना चाहिए कि मियाँ नज़ीर हुसैन इसी तक़्वा के मार्ग पर चले हैं या दूसरी ओर क़दम मारा है। अतएव स्पष्ट हो कि मियाँ नज़ीर हुसैन ने तक़्वा और ईमानदारी की राह को पूर्णतया छोड़ दिया है। **मैंने** दिल्ली में तीन घोषणापत्र दिए और अपने घोषणापत्रों में बार-बार स्पष्ट किया कि मैं मुसलमान हूँ और इस्लाम की आस्था रखता हूँ अपितु मैंने अल्लाह तआला की सौगन्ध खाकर संदेश

पहुँचाया कि मेरे किसी लेख या भाषण में कोई ऐसी बात नहीं है जो इस्लाम की आस्था के विरुद्ध हो, हम 'अल्लाह की शरण चाहते हैं, आपत्तिकर्ताओं की अपनी ही ग़लतफ़हमी है बल्कि मैं इस्लाम के सारे अकीदों पर दिलोजान से ईमान रखता हूँ और इस्लामी अक़ीदा के विरोध से विमुख हूँ। परन्तु हज़रत मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब ने मेरी बातों की ओर कुछ भी ध्यान न दिया और बिना इसके कि कुछ जाँच-पड़ताल और पूछताछ करते, मुझे काफ़िर ठहराया। बल्कि मेरी ओर से मैं मोमिन हूँ, मैं मोमिन हूँ, के बहुत से स्पष्ट इक़रार भी सुनकर फिर भी तू मोमिन नहीं है कह दिया और बार-बार अपने लेखों, भाषणों और अपने चेलों के अख़बारों में इस विनीत का नाम काफ़िर और विधर्मी और दज्जाल रखा और चारों ओर फैलाया कि यह व्यक्ति काफ़िर और बेईमान और ख़ुदा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से विमुख है। इसलिए मियां साहिब की इन बातों से बहुत से लोगों में मुख़ालिफ़त का एक तेज़ तूफ़ान पैदा हो गया और हिन्दुस्तान और पंजाब के लोग एक बड़े फ़ितने में पड़ गए, विशेषकर दिल्ली वाले तो मियाँ साहिब की इस चिन्गारी से आग बबूला हो गये। संभवत: दिल्ली में साठ या सत्तर हज़ार के लगभग मुसलमान होगा लेकिन उनमें शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो इस विनीत के बारे में गालियों, लानतों और ठट्ठों के करने या सुनने में सम्मिलित न हुआ हो। यह सारा जमावड़ा मियाँ साहिब के ही कारनामा से हुआ है जिसको उन्होंने अपनी उम्र के अन्तिम दिनों में अपने अंजाम के लिए इकट्ठा किया। उन्होंने सच्ची गवाही छुपाकर लाखों दिलों में बैठा दिया कि यह व्यक्ति काफ़िर, धिक्कार योग्य और इस्लाम से ख़ारिज है। मैंने उन्हीं दिनों में जबकि मैं दिल्ली में ठहरा हुआ था, शहर में क़ुफ्र का व्यापक शोर देखकर एक विशेष घोषणा-पत्र इन्हीं मियाँ साहिब को सम्बोधित करके प्रकाशित किया और कई पत्र भी लिखे और बड़ी विनीतता और विनम्रता से स्पष्ट किया कि मैं काफ़िर नहीं हूँ और ख़ुदा तआला जानता है कि मैं मुसलमान हूँ और उन सब अक़ीदों पर

ईमान रखता हूँ जो अहले सुन्नत वल् जमाअत मानते हैं और कलिमा तय्यबा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ[1] का क़ायल हूँ और क़िबला (अर्थात् क़ाबा शरीफ़) की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ता हूँ और मैं नुबुव्वत का दावेदार नहीं[2] बल्कि ऐसे दावेदार को दायरा-ए-इस्लाम से ख़ारिज समझता हूँ और यह भी लिखा कि मैं फ़रिश्तों का इन्कारी भी नहीं। ख़ुदा की क़सम मैं उसी प्रकार फ़रिश्तों को मानता हूँ जैसा कि शरीअत में माना गया है और यह भी बयान किया कि मैं लैलतुलक़द्र का भी इन्कारी नहीं बल्कि मैं उस लैलतुलक़द्र पर ईमान रखता हूँ जिस का स्पष्टीकरण क़ुरआन और हदीसों में आ चुका है और यह भी स्पष्ट कर दिया कि मैं जिब्राईल के अस्तित्व और ख़ुदा की वह्यी (ईशवाणी) लाने पर ईमान रखता हूँ इन्कारी नहीं, और न मौत के बाद क़यामत के दिन पुनर्जन्म से इन्कारी हूँ और न मूर्ख प्रकृतिवादियों की तरह अपने ख़ुदा की सभी महान् विशेषताओं और व्यापक शक्तियों और उसके निशानों में सन्देह रखता हूँ और न किसी समझ से दूर होने के कारण उसके चमत्कारों के मानने से मुँह फेरने वाला हूँ और कई बार मैंने बड़े-बड़े जलसों में स्पष्ट किया है कि ख़ुदा तआला की असीमित शक्तियों पर मेरा विश्वास है बल्कि मेरे निकट शक्ति की असीमितता ईश्वरत्व की एक अनिवार्य विशेषता है। अगर ख़ुदा को मानकर फिर किसी काम के करने से उसको विवश ठहरा दिया जाए तो ऐसा ख़ुदा, ख़ुदा ही नहीं और अगर वह ऐसा ही शक्तिहीन है नऊज़बिल्लाह (हम अल्लाह की शरण चाहते हैं) तो उस पर भरोसा करने वाले जीते ही मर गये और तमाम् आशाएँ उनकी मिट्टी में मिल गयीं। निःसन्देह कोई बात उससे

---

① अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के रसूल (पैग़म्बर) हैं।

② अर्थात स्वतन्त्र नुबुव्वत का, जो किसी नबी की पैरवी (अनुसरण) के बग़ैर मिलती है। इसका पूर्ण स्पष्टीकरण आपकी किताब 'एक ग़लती का इज़ाला' और दूसरी कई अन्य किताबों में पाया जाता है-अनुवादक

अनहोनी नहीं। हाँ वह बात ऐसी होनी चाहिए कि ख़ुदा तआला की शान और पवित्रता को शोभा देती हो और उसकी व्यापक विशेषताओं और सच्चे वादों के विरुद्ध न हो। लेकिन मियाँ साहिब ने मेरे इन सभी इक़रारों के बावजूद साफ लिखा कि तुम पर क़ुफ्र का फ़तवा हो चुका और हम तुम को काफ़िर और बेईमान समझते हैं बल्कि 20 अक्तूबर सन् 1891 ई. में जो बहस की तिथि निर्धारित की गयी थी जिस से पहले उपरोक्त घोषणापत्र जारी हो चुके थे। मियाँ साहिब की ओर से बहस टालने के लिए बार-बार यही बहाना था कि तुम काफ़िर हो पहले अपना अक़ीदा तो इस्लाम के अनुसार साबित करो फिर बहस करना। उस समय भी आदरपूर्वक यही कहा गया कि मैं काफ़िर नहीं हूँ बल्कि उन तमाम् बातों पर ईमान रखता हूँ जो अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए अक़ीदे ठहराए हैं। बल्कि जैसा कि 23 अक्तूबर सन् 1891 ई. के घाषणापत्र में लिखा है, मैंने अपने हाथ से लिखित रूप में भी दिया कि मैं उन तमाम् अक़ीदों पर ईमान रखता हूँ, परन्तु अफ़सोस कि मियाँ साहिब महोदय फिर भी इस विनीत को काफ़िर ही कहते रहे और काफ़िर ही लिखते रहे और यही एक बहाना उनके हाथ में था जिसके कारण हज़रत ईसा की **मृत्यु और जीवन** के बारे में उन्होंने मुझ से बहस न की, कि यह तो काफ़िर है काफ़िरों से क्या बहस करें। अगर उनमें थोड़ा सा भी ख़ुदा का डर होता तो उसी समय से जब मेरी ओर से इस्लाम के अक़ीदे और अपने मुसलमान होने का घोषणापत्र जारी हुआ था क़ुफ्र का फ़तवा देने से रुक जाते और जिस प्रकार हज़ारों लोगों में कुफ्र के फ़तवे को फैलाया था उसी प्रकार ही बड़े-बड़े जलसों में अपनी ग़लती को स्वीकार करके मेरे इस्लाम के बारे में स्पष्ट गवाही देते और अकारण की कुधारणा से अपने आपको बचाते और सच्चाई के विरुद्ध अपने दिए हुए क़ुफ्र के फ़तवे की प्रसिद्धि का निवारण करके अपने लिए ख़ुदा तआला के निकट एक क्षमायाचना का कारण पैदा कर लेते, परन्तु उन्होंने कदापि ऐसा न किया बल्कि जब तक मैं दिल्ली में रहा,

यही सुनता रहा कि मियाँ साहिब इस विनीत के बारे में गन्दे और अकथनीय शब्द अपने मुँह से निकालते हैं और कुफ्रबाज़ी से अपने हाथ नहीं खींचे। बार-बार प्रयत्न किया गया कि वह इस घिनौने तर्ज़ से रुक जाएँ और अपनी ज़बान को रोक लें। लेकिन इस विनीत के बारे में काफ़िर-काफ़िर कहना ऐसा उनकी ज़बान पर रट गया कि वह अपनी ज़बान को रोक नहीं सके और तामसिक वृत्ति ने उनके दिल पर ऐसा क़ब्ज़ा कर लिया कि ख़ुदा तआला के डर का कोई स्थान ख़ाली न रहा। فَاعۡتَبِرُوۡا یٰۤاُولِی الۡاَبۡصَارِ ①

अब मैं उनकी क़ुफ्रबाज़ी के बारे में अधिक बयान करना नहीं चाहता। हर एक व्यक्ति अपनी कथनी और करनी के बारे में पूछा जायेगा। उनके कर्म उनके साथ और मेरे कर्म मेरे साथ परन्तु अफ़सोस तो यह है कि व्यर्थ के आरोपों और मनगढत झूठे कामों की ओर उन्होंने ध्यान दिया और जो वस्तुतः बहस योग्य मतभेद वाला विषय था अर्थात् **वफ़ात-ए-मसीह अलैहिस्सलाम**✹ उसकी ओर उन्होंने थोड़ा सा भी ध्यान न दिया। मैंने उनकी ओर कई बार लिखा कि मैं किसी दूसरे अक़ीदे में आप का विरोधी नहीं, केवल इस बात का विरोधी हूँ कि मैं आपकी तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के भौतिक शरीर के साथ जीवित रहने का क़ाइल नहीं, बल्कि मैं पूरे ईमान और विश्वास के साथ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को देहान्त पाया हुआ और स्वर्गवासियों में समझता हूँ और उनके मृत्यु पा जाने पर विश्वास रखता हूँ और क्यों विश्वास न करूँ जबकि मेरा ख़ुदा मेरा आक़ा अपनी प्यारी किताब क़ुरआन करीम में उनको मृत्यु पाए हुए लोगों के गिरोह में दाख़िल कर चुका है। पूरे क़ुरआन में एक बार भी उनके इस भौतिक शरीर के साथ आस्मान पर जाने की चमत्कारिक ज़िन्दगी और उनके पुनः आने का कोई वर्णन नहीं। बल्कि वह उनको मृत्यु प्राप्त कह कर चुप हो गया। इसलिए उनका अपने भौतिक शरीर के साथ जीवित होना और पुनः किसी समय संसार में आना

① हे बुद्धिमान लोगो ! सीख प्राप्त करो।

✹ अर्थात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का विषय

न केवल अपने पर ही हुई ईशवाणी के अनुसार सच्चाई के विपरीत समझता हूँ बल्कि मसीह के इस प्रकार जीवित रहने की विचारधारा को क़ुरआन करीम के अनुसार सुस्पष्ट सच्चे और अकाट्य प्रमाणों के द्वारा व्यर्थ और झूठ समझता हूँ। अगर यह मेरा बयान कुफ़्र की बात है या झूठ है तो **आइए** इस विषय में मुझ से बहस (शास्त्रार्थ) कीजिए फिर अगर आपने क़ुरआन और हदीस से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की हयात-ए-जिस्मानी (अर्थात भौतिक तौर पर जीवित रहना) प्रमाणित करके दिखा दिया तो मैं उस बात से तौबा कर लूँगा, बल्कि वे अपनी किताबें जिसमें यह विषय है जला दूँगा।

अगर बहस नहीं कर सकते तो आओ इस बारे में इस विषय की क़सम ही खाओ कि क़ुरआन करीम में मसीह की मृत्यु का कुछ वर्णन नहीं बल्कि भौतिक शरीर के साथ जीवित रहने का वर्णन है या कोई हदीस सही मरफ़ूअ मुत्तसिल [①] मौजूद है जिसने तवफ़्फ़ी शब्द की मृत्यु के उलट कोई व्याख्या करके मसीह के भौतिक रूप में जीवित रहने पर गवाही दी है। फिर अगर झूठी क़सम खाने के बाद एक वर्ष तक किसी बड़ी मुसीबत में आप ग्रस्त न हुए तब तुरन्त मैं आपके हाथ पर तौबा करूँगा। लेकिन अफ़सोस कि बार-बार मियाँ साहिब से यह विनती की गई, लेकिन न उन्होंने बहस की और न क़सम खाई और न काफ़िर-काफ़िर कहने से रुके। हाँ अपने इस दूर भागने की रुसवाई को लोगों से छुपाने के लिए झूठे घोषणापत्र प्रकाशित कर दिए। जिसमें यह बार-बार लिखा गया कि मानो वह तो इस विनीत को बहस के लिए अन्त तक बुलाते रहे और क़सम खाने के लिए भी तैयार थे लेकिन यह विनीत ही उनसे डर गया और मुक़ाबले पर न आया। मियाँ साहिब और शेखुलकुल (अर्थात् तमाम् लोगों का धर्म गुरू) कहलाना और इतना झूठ ! मैं

---

① वह हदीस जिसके सारे वर्णनकर्ता स्मरणशक्ति, विवेक और सदाचार की दृष्टि से विश्वसनीय हों और उनके द्वारा क्रमानुसार उस हदीस का विषय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लेकर उन तक पहुँचने के बाद संकलित किया गया हो। -अनुवादक

उनके प्रति झूठों पर.... क्या कहूँ, ख़ुदा तआला उन पर रहम करे।

पाठको ! यदि कुछ विवेक रखते हो तो नि:सन्देह समझो की ये सब बातें, मियाँ साहिब और उनके चेलों की सरासर व्यर्थ झूठी और बेहूदा बातें हैं। जबकि मेरी ओर से बार-बार घोषणापत्र इस बात के लिए जारी हुआ था कि मियाँ साहिब मसीह की मृत्यु के बारे में मुझ से बहस करें और इसी उद्देश्य के लिए मैं हानि और खर्च उठाकर एक माह तक लगातार **दिल्ली में रहा** तो फिर एक मर्मज्ञ आदमी समझ सकता है कि अगर मियाँ साहिब बहस के लिए सच्चे दिल से तैयार होते तो मैं क्यों उनसे बहस न करता। कथन मशहूर है कि साँच को आँच नहीं। मैं उसी प्रकार मसीह के देहान्त पर बहस के लिए अब भी तैयार हूँ जैसा कि पहले भी तैयार था। अगर मियाँ साहिब लाहौर में आकर बहस करना स्वीकार करें तो मैं विशेषकर उनके आने-जाने का किराया स्वयं दे दूँगा। अगर आने के लिए सहमत हों तो मैं उनके लिखित आश्वासन पर तुरन्त किराया पहले भेज सकता हूँ। अब मैं दिल्ली में बहस के लिए जाना नहीं चाहता क्योंकि दिल्ली वालों के उपद्रव को देख चुका हूँ और उनकी उपद्रवपूर्ण और धृष्टता से भरी हुई बातें सुन चुका हूँ।

وَلَا يُلْدَغُ الْمُؤْمِنُ مِنْ جُحْرٍ وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ ①

मैं तो यह भी कहता हूँ कि अगर मैं वफ़ात-ए-मसीह पर बहस करने से भागूँ या मुँह फेरूँ तो मुझ पर अल्लाह के मार्ग में रुकावट बनने के कारण उसकी सहस्त्र लानत हो और अगर शेख़ुल-कुल② नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी मुँह फेरें या भागें तो उन पर इससे आधी ही सही, और अगर वह हाज़िर होने से मुँह फेरते हैं तो मैं यह भी अनुमति देता हूँ कि वह अपने घर से ही लेखों के द्वारा सच्चाई को उजागर करने के लिए बहस कर लें। अतएव मैं हर प्रकार से तैयार हूँ और मियाँ साहिब के सच्चे और यथार्थ जवाब की

① मोमिन एक छेद से दो बार नहीं डसा जाता।

② अर्थात बड़ा मौलवी या विद्वान

प्रतीक्षा करता हूँ। मैं अधिक तन्मयता से मियाँ साहिब की ओर इस लिए तत्पर हूँ कि लोगों के विचार में उनकी विद्वता सबसे बढ़ी हुई है और वह हिन्दुस्तान के विद्वानों में जड़ की तरह हैं और निश्चय ही जड़ के काटने से तमाम् शाखें स्वयं गिर जायेंगी, इसलिए मुझे जड़ ही की ओर ध्यान देना चाहिए शाखों का काम तो स्वत: ही समाप्त हो जाएगा तथा इस बहस से लोगों पर स्पष्ट हो जायेगा कि शैखुल-कुल नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी के पास हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भौतिक (सशरीर) दृष्टि से अब तक जीवित रहने की कौन से विश्वसनीय सबूत हैं, जिनके कारण उन्होंने लोगों को भयानक नितान्त उन्माद में डाल रखा है। लेकिन यह भविष्यवाणी भी याद रखो कि वह **कदापि बहस नहीं** करेंगे और अगर करेंगे तो ऐसे शर्मिन्दा होंगे कि मुँह दिखाने की जगह न मिलेगी।

आह! मुझे उन पर बड़ा अफ़सोस है कि उन्होंने थोड़े दिनों की ज़िन्दगी की शोहरत की चाह करके सच को छुपाया और सच्चाई को छोड़ कर झूठ से दिल लगाया। उनको पूर्णतया ज्ञात था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु क़ुरआन करीम और **सही मरफ़ूअ हदीसों**[1] से अच्छी प्रकार प्रमाणित है। परन्तु सरासर छल-कपट और अधर्म की राह से इस क़सम खाने से वह जानबूझ कर पीछे हटे रहे, उन्होंने सच्चाई का पक्का दुश्मन बनकर केवल झूठे तौर पर लोगों में इस बात को फैलाया कि क़ुरआन करीम में यही लिखा है कि मसीह इब्ने मरयम ज़िन्दा अपने भौतिक शरीर सहित आस्मान पर उठाया गया है और मृत्यु का कहीं वर्णन नहीं। परन्तु चूँकि वह हृदय से जानते थे कि हम असत्य पर हैं और क़ुरआन शरीफ़ के विरुद्ध कह रहे हैं। इसलिए वह सच्ची नीयत से बहस करने के लिए मुक़ाबले पर न आये और अनर्थ की शर्तों के साथ इस संक्षिप्त और साफ़-सुथरी बहस के तरीक़े को टाल दिया।

---

①-हज़रत मुहम्मद साहब के वे कथन जो उच्चकोटि की स्मरण शक्ति रखने वाले सदाचारी पुरुषों द्वारा जिनका प्रमाण हज़रत मुहम्मद साहब तक पहुँचता है। - (अनुवादक)

आश्चर्य की बात है कि ख़ुदा तआला तो यह फरमाए कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है और मियाँ नज़ीर हुसैन यह कहें कि नहीं कदापि नहीं बल्कि वह तो ज़िन्दा अपने भौतिक शरीर के साथ आस्मान की ओर उठाया गया है। शाबाश! हे नज़ीर हुसैन तूने ख़ूब क़ुरआन की पैरवी की। आश्चर्यजनक यह कि क़ुरआन करीम में आस्मान की ओर उठा लेने का कहीं वर्णन भी नहीं, बल्कि मृत्यु देने के उपरान्त अपनी ओर उठा लेने का वर्णन है जैसा कि साधारणतया मृत्यु पा जाने वाले सदाचारियों के लिए

اِرْجِعِیۡۤ اِلٰی رَبِّکِ (الفجر آیت:29)[1]

का संबोधन है। अतः उसी प्रकार ख़ुदा की ओर उठाया जाना और उसकी ओर लौटना, जिसके लिए पहले मृत्यु पाना शर्त है हज़रत मसीह को भी नसीब हो गया। कहाँ यह अल्लाह की ओर उठाया जाना और कहाँ रफ़अ इलस्समाअ आसमान की ओर उठाया जाना। आह अफ़सोस ! इन लोगों ने क़ुरआन करीम से कैसे मुँह फेर लिया और उसकी महानता उनके दिलों से पूर्णतः उठ गयी और ख़ुदा तआला की पवित्र किताब के स्थान पर झूठी बात से प्रेम करने लगे। किताबों से तो लदे हुए हैं परन्तु ख़ुदा तआला ने **समझ छीन ली**, जीत और हार के विचार ने सच और ईमान को दबा लिया और घमण्ड और अभिमान ने सत्य को स्वीकार करने से दूर कर दिया। मुझे इस बात का थोड़ा सा भी दुःख नहीं कि मियाँ नज़ीर हुसैन और उनके चेलों ने एक झूठी जीत को सत्य के विरुद्ध मशहूर कर दिया और सत्य को छुपाया। मेरे लिए यह कुछ दुःख की बात नहीं क्योंकि जिस हालत में ठीक-ठीक और सच्ची बात यही है कि वास्तविक रूप से मियाँ साहिब ही एक बड़ी रुसवाई के साथ हमेशा के लिए पराजित और हार गये हैं और ऐसे गिरे हुए हैं कि अब फिर कभी खड़े नहीं होंगे। यहाँ तक कि इसी पराजित अवस्था में इस संसार

---

[1] अपने रब्ब की ओर प्रसन्न होते हुए और उसकी प्रसन्नता पाते हुए लौट आ।

से ग़ुज़र जायेंगे। फिर अगर वह लोगों की भर्त्सना पर पर्दा डालने के लिए एक झूठी जीत का नक्शा अपनी आँखों के समक्ष रखकर कुछ मिनटों के लिए अपना दिल ख़ुश कर लें तो मुझे क्यों बुरा मानना चाहिए। बल्कि अगर दया की दृष्टि से देखा जाय तो उनका यह अधिकार भी है, क्योंकि मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि उन्होंने इस विनीत के मुक़ाबले पर खुली-खुली हार खाकर बहुत कुछ ग़म-व-ग़ुस्सा उठाया है और उनके दिल पर इस बुढ़ापे में रुसवाई और शर्मिंदगी का बहुत बड़ा सदमा पहुँचा है। अब अगर ग़म दूर करने के लिए घटना के विरुद्ध जीत का ढोल बजाकर इतना भी न करते तो बुढ़ापे का कमज़ोर दिल इतने बड़े सदमा को कैसे बर्दाश्त कर सकता? इसलिए सम्भवत: उन्होंने ख़ुदकुशी करना हराम समझकर इतना बड़ा झूठ अपने लिए उचित रख लिया। मुझे अब भी इस की आवश्यकता न थी कि मैं इस सच्ची बात को कहकर उनकी झूठी खुशी को नष्ट कर देता, क्योंकि जीत और हार पर नज़र रखना एक शर्मिन्दगी वाला विचार है। सच्चाई के प्रेमी सच्चाई को ही पसन्द करते हैं चाहे वह जीत की हालत में मिले या हार की लेकिन लोग ऐसी ग़लत और मुख़ालिफ़ाना तहरीरों (लेखों) से धोखे में पड़ जाते हैं और घटना के विरुद्ध शोहरत से प्रभावित होकर उन तहरीरों को सही और सम्मानजनक समझने लगते हैं और फिर उसका दुष्प्रभाव लोगों के धर्म को बहुत नुकसान पहुँचाता है। इसलिए वास्तविक सच्चाई का प्रकट करना एक अति आवश्यक कर्तव्य और एक ज़रूरी ऋण मुझ पर था जो अदा किए बिना ख़त्म नहीं हो सकता था। मगर मैं इस बात से तो शर्मिन्दा हूँ कि मियाँ साहिब के बुढ़ापे की हालत में उनके पुन: ग़म ताज़ा करने का कारण हुआ हूँ।

इस जगह यह बयान करना भी बे मौक़ा नहीं कि मियाँ साहिब के अकारण के ज़ुल्मों में से जो उन्होंने इस विनीत के बारे में जाइज़ रखे एक यह भी है कि बटालवी को उन्होंने पूरी तरह खुला छोड़ दिया और इस बात पर राज़ी हो गये कि वह हर एक तरह की गालियों और लानत एवं व्यंग से

इस विनीत को अपमानित करे। अतः वह मियाँ की इच्छा पाकर हद से गुज़र गया और पवित्र आयत

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ (النّساءآيت:149) ①

की कुछ भी परवाह न करके ऐसी ग़न्दी गालियों पर आ गया कि अधम और नीच लोगों के भी कान काटे। यहाँ तक कि इस पवित्र स्वभाव व्यक्ति ने सैकड़ों लोगों के सामने **दिल्ली** की जामा मस्जिद में इस विनीत को गन्दी-गन्दी गालियाँ दीं। अतः गालियों के सुनने वालों में से **शेख़ हामिद अली** मेरा कर्मचारी भी है जो उस समय मौजूद था जिसकी दूसरे लोगों ने भी गवाही दी। ऐसा ही इस बुज़ुर्ग ने फ़िल्लौर के स्टेशन पर एक भीड़ के सामने इस विनीत के बारे में कहा कि वह कुत्ते की मौत मरेगा और सारे लेखों में इस विनीत का नाम काफ़िर और दज्जाल रखा और 11 अक्तूबर सन् 1891 ई. के कार्ड में जो उसने मुंशी फ़तह मुहम्मद कर्मचारी रियासत जम्मू के नाम लिखा जो इस समय मेरे सामने पड़ा है, गालियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखा। खुली तहरीर में गन्दी गालियाँ देना और कार्डों में जिनको हर एक व्यक्ति पढ़ सकता है बद ज़ुबानी करना और अपने मुख़ालिफ़ाना जोश को चरम सीमा तक पहुँचाना, क्या इस **आदत** को ख़ुदा तआला पसन्द करता है या इसको सज्जन लोगों का काम कह सकते हैं? इस **11 अक्तूबर** के कार्ड में इस बुज़ुर्ग ने बड़े जोश से इस विनीत के बारे में लिखा है कि यह व्यक्ति वास्तव में **काफ़िर** है, **दज्जाल** है, नास्तिक है, **अत्यन्त झूठा** है। हे मेरे मौला! हे मेरे प्यारे ख़ुदा ! मैंने इस व्यक्ति की समस्त कठोर बातों और लानतों और गालियों का जवाब तुझ पर छोड़ा। अगर तेरी यही इच्छा है तो जो कुछ तेरी इच्छा है वह मेरी इच्छा है। मुझे इससे बढ़कर कुछ नहीं चाहिए कि तू प्रसन्न हो। मेरा दिल तुझ से छुपा नहीं तेरी नज़रें मेरी तह तक पहुँची हुई हैं अगर मुझ में कुछ फ़र्क है तो निकाल डाल और अगर तेरी नज़र में मुझ में कुछ

①-अल्लाह खुले आम बुरी बात कहने को पसन्द नहीं करता

बुराई है तो मैं उससे तेरी शरण चाहता हूँ। हे मेरे प्यारे पथ प्रदर्शक!! अगर मैंने तबाही का मार्ग अपनाया है तो मुझे इससे बचा और वे काम करने की शक्ति प्रदान कर कि जिसमें तेरी रज़ामन्दी हो। मेरी आत्मा बोल रही है कि तू मेरे लिए है और होगा। जब से कि तूने कहा कि मैं **तेरे साथ हूँ** और जबसे तूने मुझे संबोधित करके फ़रमाया कि:-

اِنِّیْ مُهِيْنٌ مَنْ اَرَادَ اهَانَتَكَ ①

और जब से तूने ढारस और दयादृष्टि करते हुए मुझ से कहा कि

اَنْتَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَةٍ لَا يَعْلَمُهَا الْخَلْقُ ②

तो उसी क्षण से मेरे दिल में जान आ गयी। तेरी दिल को आराम पहुँचाने वाली बातें मेरे ज़ख़्मों का मरहम हैं। तेरी प्यार भरी बातें मेरे दुख़ी दिल को ख़ुश करने वाली हैं। मैं ग़मों में डूबा हुआ था तूने मुझे ख़ुशख़बरियाँ दीं। मैं पीड़ित था तूने मुझे पूछा, प्यारे! मेरे लिए यह ख़ुशी काफ़ी है कि तू मेरे लिए और मैं तेरे लिए हूँ। तेरे प्रहार दुश्मनों की पंक्तियां तोड़ेंगे और तेरे समस्त वादे पूरे होंगे और तू अपने भक्त का मुक्तिदाता होगा।

फिर मैं पहली बात की ओर लौटकर पाठकों पर स्पष्ट करना चाहता हूँ कि जितनी मैंने **बटालवी** की सख़्त ज़ुबानी लिखी है वह केवल नमूने मात्र है अन्यथा उस व्यक्ति की बद्ज़ुबानी की कुछ सीमा नहीं रही और वस्तुतः यह सारी बदज़ुबानी मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब की है क्योंकि गुरू की मंशा के विरुद्ध चेले की कभी जुर्रत नहीं होती। मियाँ साहिब ने स्वयं भी बद्ज़ुबानी की और कराई भी और बटालवी की कोई बद्गोई मियाँ साहिब को बुरी न लगी और मियाँ साहिब के मकान में बैठकर अहंकार से भरा हुआ एक ओर घोषणापत्र बटालवी ने लिखा जिसमें इस विनीत के बारे में यह वाक्य लिखा था कि यह मेरा शिकार है जो दुर्भाग्य से फिर दिल्ली में मेरे क़ब्ज़े में आ गया

①-जो तुझे अपमानित करने की कोशिश करेगा मैं उसे अपमानित कर दूँगा

②-तेरा मेरे निकट वह स्थान और मर्तबा है जिसको लोग नहीं जानते

और मैं भाग्यशाली हूँ कि भागा हुआ शिकार फिर मुझे मिल गया। पाठको!! न्याय की दृष्टि से बताओ कि ये कैसी नीचता की बातें हैं। मैं सच-सच कहता हूँ कि इस युग के सभ्य डोम और भाँड भी थोड़ी बहुत शर्म करते हैं और पीढ़ियों के नीच भी ऐसा कमीनगी और शेख़ी से भरा हुआ घमण्ड अपने यथार्थ के जानने वाले के सामने मुँह पर नहीं लाते। अगर मैं बटालवी साहिब का शिकार होता तो उसके गुरू को दिल्ली में क्यों जा पकड़ता, क्या चेला गुरू से बड़ा है? जब गुरू ही चिड़िया की तरह मेरे पंजे में गिरफ्तार हो गया तो फिर पाठकगण समझ सकते हैं कि क्या मैं बटालवी का शिकार हुआ या बटालवी मेरे शिकार का शिकार। बटालवी की डींगें चरम सीमा को पहुँच गयी हैं और उसकी खोपड़ी में एक कीड़ा है जिसको अवश्य एक दिन ख़ुदा तआला निकाल देगा। अफ़सोस कि आजकल हमारे मुख़ालिफ़ों का झूठ और तोहमतों पर ही गुज़ारा है और फ़िरऔनी रंग के घमण्ड से अपनी प्रतिष्ठा चाहते हैं। फ़िरऔन अपने लश्कर सहित डूबने के दिन तक यही समझता रहा कि मूसा उसका शिकार है लेकिन अन्ततः **नील** नदी ने दिखा दिया कि वास्तविक रूप से कौन शिकार था। मैं शर्मिन्दा हूँ कि अयोग्य प्रतिद्वन्दी के मुक़ाबले ने मुझे कुछ कठोर शब्दों पर मजबूर किया अन्यथा मेरी प्रकृति इस से दूर है कि कोई कड़वी बात मुँह पर लाऊँ। मैं कुछ भी बोलना नहीं चाहता था किन्तु बटालवी और उसके गुरू ने मुझे बोलने पर मजबूर किया। अब भी बटालवी के लिए अच्छा है कि अपनी **नीति** बदल ले और मुँह में लगाम लगाए नहीं तो इन दिनों को रो-रोकर याद करेगा।

با درد کشاں ہر کہ در افتاد در افتاد

وما علینا الا البلاغ المبین[1]

گندم از گندم بروید جو ز جو — از مکافات عمل غافل مشو[2]

---

① हमारा कर्तव्य केवल खोलकर बता देना है।

② गेहूँ से गेहूँ पैदा होता है और जौ से जौ, अत: तू अपने कर्मों के बदले से बेख़बर न हो

जो लोग उन झूठे घोषणा पत्रों पर खुश हो रहे हैं जिनमें मियाँ नज़ीर हुसैन की झूठी जीत का वर्णन है। मैं केवल अल्लाह के लिए उनको नसीहत करता हूँ कि इस झूठ में व्यर्थ का गुनाह अपने सिर न लें। मैं 23 अक्तूबर सन् 1891 ई. के घोषणा पत्र में विस्तार से बयान कर चुका हूँ कि मियाँ साहिब ही बहस करने से पीछे हट गये। यह शरारत और निर्लज्जता पूर्ण आरोप है जो कि मेरे बारे में उड़ाया गया है कि मानो मैं नज़ीर हुसैन से डर गया। मैं कदापि उनसे नहीं डरा और क्यों डरता? मैं उस विवेक के सामने जो मुझे ख़ुदा की ओर से प्रदान किया गया है इन तुच्छ और घटिया मुल्लाओं को पूर्णतया अन्धा और मूर्ख समझता हूँ और ख़ुदा की सौगन्ध एक मरे हुए कीड़े के समान भी मैं उन्हें नहीं समझता। क्या कोई ज़िन्दा मुर्दों से डरा करता है? पूर्णतः जान लो कि धार्मिक ज्ञान एक ईश्वरीय रहस्य है और वही यथार्थ रूप से ईश्वरीय रहस्य को जानता है जो ईश्वर से वरदान पाता है। जो ख़ुदा तआला तक पहुँचता है वही उसकी वाणी के गूढ़ रहस्यों तक भी पहुँचता है। जो पूरे प्रकाश में बैठता है वही पूरी दृष्टि भी पाता है। हाँ अगर यह कहा जाता कि मैं उनकी गन्दी ग़ालियों से डर गया और उनकी गन्दगी से भरी हुई बातों से भयभीत हुआ तो शायद कहीं तक सच भी होता क्योंकि हमेशा सज्जन लोग गालियाँ बकने वाले लोगों से डरा करते हैं और सभ्य लोग गन्दी भाषा बोलने वालों से परहेज़ कर जाते हैं।

شریف از سفلہ نے ترسد بلکہ از سفلگی اوے ترسد ①

मूल सच्चाई यह है कि ख़ुदा तआला की इच्छा थी कि मियाँ नज़ीर हुसैन के दोषों को सार्वजनिक करे और उनके अहंकारपूर्ण उच्च स्वर की वास्तविकता लोगों पर प्रकट कर दे। अतः **मर्मज्ञ** जानते हैं कि वह ख़ुदा की इच्छा पूरी हो गयी और नज़ीर हुसैन के तक़्वा (संयम) और ख़ुदापरस्ती तथा ज्ञान और आध्यात्म की सारी पोल खुल गई और संयम को छोड़ने के

①-सज्जन लोग नीच लोगों से नहीं डरते अपितु उनकी नीचता से डरते हैं।

परिणामस्वरूप उनको एक अपमान मिला लेकिन एक और अपमान अभी शेष है जो उनके और उनके विचारों से सहमत लोगों के लिए तैयार है। जिसका हम नीचे वर्णन करते हैं:-

اے خدا اے مالک ارض و سما — اے پناہ حزب خود در ہر بلا
اے رحیم و دست گیر و رہنما — ایکہ در دستِ تو فصل است و قضا
سخت شورے اوفتاد اندر زمین — رحم کن برخلق اے جان آفرین
امر فیصل از جناب خود نما — تا شود قطع نزاع و فتنہ ہا
اک کرشمہ اپنی قدرت کا دکھا — تجھ کو سب قدرت ہے اے ربُّ الوریٰ
حق پرستی کا مٹا جاتا ہے نام — اک نشاں دکھلا کہ ہو حجت تمام ①

ख़ुदा की भविष्यवाणी

كِتَابٌ سَجَّلْنَاهُ مِنْ عِنْدِنَا

यह वह किताब है जिस पर हमने अपनी ओर से मुहर लगा दी है।

आसमानी फ़ैसला

पूर्व इसके कि मैं आसमानी फ़ैसले का वर्णन करूँ वास्तविकता वर्णन करने के लिए इतना लिखना आवश्यक है कि यह बात स्पष्ट है कि जो लोग ख़ुदा तआला के निकट वास्तविक रूप से मोमिन हैं और जिनको ख़ुदा तआला ने विशेषकर अपने लिए चुन लिया है और अपने हाथ से शुद्ध किया है और

①- हे ख़ुदा! हे पृथ्वी और आकाश के स्वामी, हर एक आपदा में अपने सेवकों को शरण देने वाले। हे दयालु , गिरते को थामने वाले और सन्मार्ग दिखाने वाले, तेरे हाथ में निर्णय और आदेश है। दुनिया पर भयानक चीख-पुकार है, हे प्राणदायक! लोगों पर दया कर और अपनी ओर से एक निर्णय करके स्वयं दिखा दे ताकि ये विवाद और फ़ित्ना समाप्त हो जाएँ। एक चमत्कार अपनी क़ुदरत का दिखा दे कि हे ख़ुदा! तू सर्वशक्तिमान है। एकेश्वरवाद संसार से ख़त्म होता जा रहा है। हे ख़ुदा! एक ऐसा चमत्कार दिखा कि सबूत पूरा हो जाए।

अपने पवित्र लोगों के वर्ग में स्थान दिया है और जिनके बारे में फ़रमाया है:–

فِیۡ وُجُوۡہِہِمۡ مِّنۡ اَثَرِ السُّجُوۡدِ (الفتح:30)[1]

उनमें सज्दों और बन्दगी के लक्षण अवश्य पाए जाने चाहिए।

क्योंकि ख़ुदा तआला के वादों में त्रुटि और छल नहीं। इसलिए मोमिनों में उन सारी निशानियों का पाया जाना, जिनका क़ुरआन करीम में मोमिनों की परिभाषा में वर्णन किया गया है, ईमान की अनिवार्यताओं में से है, और मोमिनों और ऐसे व्यक्ति के मध्य जिसका नाम उसकी क़ौम के विद्वानों ने काफ़िर रखा और झूठा और दज्जाल एवं नास्तिक ठहराया फैसला करने के लिए यही निशानियाँ पूर्णतः **कसौटी** और मापदण्ड हैं। अगर कोई व्यक्ति अपने मुसलमान भाई का नाम काफ़िर रखे और इससे सन्तुष्ट न हो कि वह व्यक्ति अपने ईमानदार होने का इक़रार करता है और कलिमा तय्यबा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ[2] को स्वीकार करने वाला है और इस्लाम के समस्त अक़ीदों का मानने वाला है और ख़ुदा तआला के द्वारा ठहराए गए समस्त कर्तव्यों, सीमाओं और आदेशों का पालन करना अनिवार्य समझता है और सामर्थ्यानुसार उन पर चलता है। तो फिर अन्ततः फ़ैसले का तरीक़ा यह है कि दोनों पक्षों को उन निशानियों में आज़माया जाए जो ख़ुदा तआला ने **मोमिन** और **काफ़िर** में अन्तर स्पष्ट करने के लिए क़ुरआन करीम में बयान की हैं ताकि जो व्यक्ति वास्तव में ख़ुदा तआला के निकट मोमिन है उसको ख़ुदा तआला अपने वादे के अनुसार कुफ्र की तोहमत से बरी करे और उसमें और उसके प्रतिपक्ष में अन्तर करके दिखा दे और हर दिन का क़िस्सा ख़त्म हो जाए। यह बात हर एक बुद्धिमान समझ सकता है कि अगर यह विनीत, मियाँ नज़ीर हुसैन और उसके चेले बटालवी के विचारों के अनुसार

---

① उनमें विनम्रता और बंदगी (भक्ति) के निशान अवश्य पाये जाते हैं।

② अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

वास्तव में काफ़िर और दज्जाल और झूठा और धिक्कृत और दायरा-इस्लाम से निष्कासित है तो ख़ुदा तआला मुक़ाबला के समय इस विनीत को सच्चा साबित करने के लिए ईमानदारों का कोई निशान प्रकट नहीं करेगा क्योंकि ख़ुदा तआला काफ़िरों और अपने धर्म के मुख़ालिफ़ों के बारे में जो बेईमान और धिक्कृत हैं, ईमान की निशानियाँ दिखा कर कदापि समर्थन प्रकट नहीं करता और क्योंकर करे जबकि वह उनको जानता है कि वे धर्म के दुश्मन हैं और ईमान की नेअमत से वंचित हैं। अतः मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब और बटालवी ने मेरे बारे में जो कुफ्र और नास्तिकता का फ़त्वा लिखा है। अगर मैं वास्तव में ऐसा ही काफ़िर और दज्जाल और धर्म का दुश्मन हूँ तो ख़ुदा तआला इस मुक़ाबले में कदापि मेरा समर्थन नहीं करेगा बल्कि अपने समर्थनों से मुझे वंचित रखकर ऐसा अपमानित करेगा कि जैसा इतने बड़े झूठे की सज़ा होनी चाहिए और इस दशा में मुसलमान मेरे फ़साद से बच जाएँगे और समस्त मुसलमान मेरे फ़ित्ना से अमन में आ जायेंगे, लेकिन अगर ख़ुदा का करिश्मा यह प्रकट हुआ कि ख़ुद मियाँ नज़ीर हुसैन और उनकी जमाअत के लोग बटालवी इत्यादि समर्थन के निशानों में लज्जित और परित्यक्त रहे और ख़ुदा का समर्थन मेरे साथ हो गया तो इस दशा में भी लोगों पर सच्चाई खुल जायेगी और हर दिन के झगड़ों का अन्त हो जायेगा।

अब जानना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुरआन में पूर्ण संयमी और पूर्ण मोमिनों को चार महान आसमानी समर्थनों का वचन दिया है और वही पूर्ण मोमिन की पहचान के लिए पूर्ण निशानियाँ हैं। और वे ये हैं:-

(1) पूर्ण मोमिन को ख़ुदा तआला से अधिकतर ख़ुशख़बरियाँ मिलती हैं अर्थात् जो उसकी इच्छाएँ या उसके मित्रों की अभिलाषाएँ हैं उनके बारे में घटित होने से पूर्व उसे ख़ुशख़बरियाँ दी जाती हैं।

(2) पूर्ण मोमिन पर परोक्ष के ऐसे रहस्य खुलते हैं जो न केवल उसके अपने बारे में या उससे संबंध रखने वालों के बारे में होते हैं बल्कि जो कुछ

संसार में होने वाला है या संसार के कतिपय विख्यात लोगों पर कुछ परिवर्तन आने वाले हैं उनसे मोमिन को प्राय: ख़बर दी जाती है।

(3) पूर्ण मोमिन की दुआएँ स्वीकार की जाती हैं और अक्सर उन दुआओं के स्वीकार होने की पहले से सूचना भी दी जाती है।

(4) पूर्ण मोमिन पर क़ुरआन करीम के नए-नए गूढ़ रहस्य तथा दिव्यज्ञान और अद्‌भुत विशेषताएँ सब से अधिक प्रकट की जाती हैं।

इन चारों विशेषताओं में पूर्ण सदाचारी मोमिन अपेक्षाकृत दूसरों पर विजयी रहता है। हालाँकि सदैवी तौर पर यह व्यापक नियम नहीं है कि हमेशा पूर्ण मोमिन को अल्लाह की ओर से ख़ुशख़बरियाँ ही मिलती रहें या हमेशा पलक झपकते हर एक दुआ उसकी स्वीकार हो जाया करे और न यह कि हमेशा ज़माने की हर एक घटना से उसको सूचना दी जाए और न यह कि हर समय उस पर क़ुरआन करीम के गूढ़ रहस्य खुलते रहें लेकिन दूसरों से मुक़ाबला के समय इन चारों निशानियों में अधिकता मोमिन ही की तरफ रहती है परन्तु सम्भव है कि दूसरे को भी जैसे कि अपूर्ण मोमिन को भी यदा-कदा इन नेअमतों से कुछ हिस्सा दिया जाए, परन्तु इन नेअमतों का **वास्तविक वारिस** पूर्ण मोमिन ही होता है। हाँ यह सत्य है कि पूर्ण मोमिन का यह स्थान मुक़ाबले के बिना हर एक मूर्ख, नासमझ और संकीर्ण विचारधारा रखने वालों पर स्पष्ट नहीं हो सकता। इसलिए सच्चे और पूर्ण मोमिन को पहचानने के लिए अत्यन्त स्पष्ट और सरल वास्तविक उपाय मुक़ाबला ही है। हालाँकि यह सारे लक्षण स्वयं भी पूर्ण मोमिन से प्रकट होते रहते हैं लेकिन एकतरफ़ा तौर पर कुछ कठिनाइयां भी हैं। जैसे कभी-कभी पूर्ण मोमिन की सेवा में दुआ कराने के लिए ऐसे लोग भी आ जाते हैं जिनके भाग्य में कदापि सफलता नहीं होती और ख़ुदा की क़लम अटल तौर पर उनके विरुद्ध चली हुई होती है। इसलिए वे लोग अपनी नाकामी के कारण पूर्ण मोमिन की इस कुबूलियत की निशानी को पहचान नहीं सकते बल्कि और भी शक में पड़ जाते हैं और

अपने वंचित रहने के कारण से पूर्ण मोमिन की क़ुबूलियत की विशेषताओं से अवगत नहीं हो सकते। जबकि पूर्ण मोमिन का ख़ुदा तआला के निकट महान् दर्जा और स्थान होता है और उसकी गिड़गिड़ाहट और दुआ से बड़े-बड़े जटिल काम ठीक किए जाते हैं और कुछ ऐसी तक़दीरें जो अटल तक़दीर से मिलती जुलती हों, परिवर्तित भी की जाती हैं। किन्तु जो तक़दीर पूर्णतः अटल है वह पूर्ण मोमिन की दुआओं से कदापि परिवर्तित नहीं की जाती चाहे वह पूर्ण मोमिन नबी या रसूल का ही पद रखता हो।

अतः पूर्ण मोमिन इन चारों प्रकार की निशानियों में अपने प्रतिद्वन्दी से अपेक्षाकृत स्पष्ट तौर पर विशिष्ट स्थान पर होता है हालाँकि पूर्णतः समर्थ और सफल नहीं हो सकता। अतः जब यह बात साबित हो चुकी कि सच्चे और पूर्ण मोमिन को दूसरों की अपेक्षा अधिक शुभ संदेश पाने और अधिक दुआएँ क़ुबूल होने और अधिक परोक्ष की बातों और क़ुर्आनी ज्ञानों का बहुलता के साथ प्रकटन का अत्यधिक भाग मिलता है तो पूर्ण मोमिन और उसके प्रतिद्वन्द्वी के आज़माने के लिए इससे अच्छा और कोई उपाय न होगा कि मुक़ाबले के द्वारा इन दोनों को जाँचा और परखा जाए अर्थात् अगर यह बात लोगों की दृष्टि में सन्देहास्पद हो कि दो लोगों में से कौन ख़ुदा के निकट पूर्ण मोमिन है और कौन इस दर्जा से गिरा हुआ है तो इन्हीं चार निशानों के साथ मुकाबला होना चाहिए। अर्थात् इन चारों निशानियों को कसौटी और मापदण्ड बना कर मुक़ाबला के समय देखा जाए कि इस कसौटी और मापदण्ड की दृष्टि से कौन व्यक्ति पूरा उतरा है और किसकी हालत में कमी और नुकसान है ?

अब जनता गवाह रहे कि मैं केवल अल्लाह के लिए और सच्चाई का प्रकट करने के लिए इस मुक़ाबले को दिलोजान से स्वीकार करता हूँ और मुक़ाबले के लिए जो लोग मेरे सामने आना चाहें उनमें सबसे **पहला नम्बर**

मियाँ नज़ीर हुसैन देहलवी का है जिन्होंने पचास वर्ष से अधिक क़ुरआन और हदीस पढ़ाकर फिर अपने ज्ञान और कर्म का **यह नमूना** दिखाया कि बिना पूछताछ और जाँच पड़ताल के इस विनीत पर कुफ्र का फ़त्वा लिख दिया और हज़ारों गँवार और उग्रस्वभाव लोगों को बद्ज़न करके उनसे गन्दी गालियाँ दिलायीं और बटालवी को एक पागल हिंसक पशु के समान कुफ्र और लानत की **झाग** मुँह से निकालने के लिए छोड़ दिया और स्वयं पक्के मोमिन और अरब और समस्त दुनिया के आचार्य और अगुवा **बन बैठे**। इसलिए मुक़ाबला के लिए सबसे पहले उन्हीं को **आमंत्रित** किया जाता है। हाँ उनको अधिकार है कि वह अपने साथ बटालवी को भी, जो कि अब ख़्वाबबीनी का भी दावा रखता है मिला लें। बल्कि उनको मेरी ओर से अधिकार है कि वह मौलवी अब्दुल जब्बार साहिब पुत्र अब्दे सालेह मौलवी अब्दुल्लाह साहिब मरहूम और मौलवी अब्दुर्रहमान लक्खू वाले को जो मेरे बारे में दाइमी पथभ्रष्ट होने का इल्हाम प्रकाशित कर चुके हैं और कुफ्र का फ़त्वा दे चुके हैं और मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब भोपालवी को भी जो उनके अनुयायियों में से हैं, इस मुक़ाबले में अपने साथ मिला लें और अगर मियाँ साहिब महोदय अपनी आदत के अनुसार पीठ फेर लें तो यही उपरोक्त लोग मेरे मुकाबले पर आएं और अगर ये सब भी पीठ फेर लें तो फिर मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही इस काम के लिए हिम्मत करें क्योंकि मुकल्लिदों की पार्टी के तो वही प्रथम स्तम्भ हैं और उनके साथ हर एक ऐसा व्यक्ति भी सम्मिलित हो सकता है जो नामी और मशहूर सूफ़ियों और पीरज़ादों और सज्जाद:नशीनों में से हो और उन्हीं उलमा साहिबों की तरह इस विनीत को काफ़िर और धूर्त और झूठा और मक्कार समझता हो और अगर ये सब के सब मुक़ाबला करने से मुँह फेर लें और निराधार मजबूरियों और अनुचित बहानों से मेरे इस आमन्त्रण के स्वीकार करने से पीठ फेर लें तो ख़ुदा तआला का सबूत उन पर पूरा है।

मैं अवतार हूँ और विजय की मुझे शुभसूचना दी गई है इसलिए मैं उपरोक्त सज्जनों को मुक़ाबला के लिए बुलाता हूँ **कोई है जो मेरे सामने आए ?** और मुक़ाबला के लिए सुव्यवस्था यह है कि लाहौर में जो पंजाब का केन्द्र है, इस आज़माइश के उद्देश्य से एक कमेटी गठित की जाय, अगर प्रतिपक्ष इस प्रस्ताव को पसन्द करे तो कमेटी के मेम्बर दोनों पक्षों की सहमति से नियुक्त किए जाएँगे और मतभेद के समय **बहुमत** को समक्ष रखा जाएगा और उचित होगा कि चारों निशानियों की पूर्णतः आज़माइश के लिए दोनों पक्ष एक वर्ष तक कमेटी में तिथि सहित अपनी तहरीरें भेजते रहें और कमेटी की ओर से प्राप्त की गई तहरीरों के वर्णन की तिथि सहित रसीदें दोनों पक्षों को भेजी जाएँगी।

पहली निशानी:- शुभ संदेशों की आज़माइश का तरीक़ा यह होगा कि दोनों पक्षों पर जो कुछ अल्लाह की ओर से इल्हाम और कश्फ़ (अर्थात् ईशवाणी) इत्यादि के द्वारा प्रकट हो वह बात तिथि सहित और चार मुसलमान गवाहों के हस्ताक्षर समेत घटित होने से पूर्व कमेटी में पहुँचा दी जाए और कमेटी अपने रजिस्टर में तिथि सहित उसको लिख ले और उस पर कमेटी के सारे मेम्बर या कम से कम पाँच मेम्बरों के हस्ताक्षर होकर फिर उसकी एक रसीद प्रेषक को वर्णित स्पष्टीकरण के अनुसार भेजी जाए और उस भविष्यवाणी के सच या झूठ निकलने की प्रतीक्षा की जाए और किसी परिणाम के प्रकट होने के समय प्रमाण सहित उसकी याददाश्त रजिस्टर में लिखी जावे और यथावत् मेम्बरों की गवाहियाँ उस पर लिखी हों।

दूसरी निशानी के बारे में भी जो दुनियाँ की दुर्घटनाओं और संकटों से संबंधित है यही प्रत्यक्ष प्रबन्ध रहेगा और स्मरण रहे कि कमेटी के पास ये सब रहस्य अमानत के तौर पर सुरक्षित रहेंगे और कमेटी इस बात का शपथपूर्वक इक़रार कर लेगी कि उस समय से पहले कि दोनों पक्षों की तुलना के लिए उन बातों का सार्वजनिक जलसे में प्रकटन हो कदापि कोई बात किसी अजनबी के

कानों तक नहीं पहुँचायी जायेगी सिवाए इसके कि किसी रहस्य का खुलना कमेटी के नियन्त्रण से बाहर हो।

तीसरी निशानी दुआ के क़ुबूल होने की आज़माइश का तरीक़ा यह होगा कि वही कमेटी विभिन्न प्रकार के कष्टग्रस्त लोगों को उपलब्ध करने के लिए जिसमें हर एक धर्म का आदमी सम्मिलित हो सकता है, एक सार्वजनिक विज्ञापन दे देगी और हर एक धर्म का व्यक्ति चाहे वह मुसलमान हो चाहे ईसाई हो या हिन्दू हो या यहूदी हो या किसी अन्य धर्म या राय का पाबन्द हो, अगर वह किसी बड़े कष्ट में ग्रस्त हो और अपने आपको कष्टग्रस्त लोगों के गिरोह में प्रस्तुत करे तो बिना किसी भेदभाव के स्वीकार किया जायेगा, क्योंकि ख़ुदा तआला ने शारीरिक और सांसारिक लाभ पहुँचाने में विभिन्न धर्मों से संबंध रखने वाले लोगों में कोई भेदभाव और अन्तर नहीं रखा और कष्टग्रस्त लोगों के उपलब्ध करने हेतु एक माह तक या जैसे कमेटी उचित समझे यह प्रबन्ध रहेगा कि उनके नाम, पिता का नाम, निवास स्थान इत्यादि के पर्चे एक सन्दूक में एकत्रित होते रहें। तत्पश्चात संतुलन को ध्यान में रखते हुए उनके नाम, पिता का नाम, क़ौम, निवास स्थान, धर्म, व्यवसाय और लगी हुई बीमारी को स्पष्ट रूप से लिख कर दो सूचियाँ बनाकर दोनों पक्षों के सामने उन कष्टग्रस्त लोगों सहित प्रस्तुत करेंगे। तदुपरान्त दोनों पक्ष उन कष्टग्रस्त लोगों को सामने रखकर उन दोनों सूचियों को क़ुर्आन पर्चियों द्वारा नाम निकाल कर आपस में बाँट लेंगे। यदि कोई कष्टग्रस्त किसी दूर दराज़ देश में हो और यात्रा की दूरी और सामर्थ्य न होने के कारण उपस्थित न हो सके तो कमेटी की एक शाख़ा उस शहर में गठित होकर जहाँ वह कष्टग्रस्त रहता है उसके कष्ट से भरे पत्र को मुख्य कमेटी में पहुँचा देगी और पर्ची द्वारा नाम निकालने के पश्चात प्रत्येक पक्ष के भाग में जो सूची आयेगी उस सूची में जो कष्टग्रस्त लोगों के नाम लिखे होंगे वे उसी पक्ष के समझे जाएँगे जिसको ख़ुदा तआला ने पर्ची द्वारा नाम निकालने के द्वारा यह सूची दे दी और अनिवार्य

होगा कि कमेटी कष्टग्रस्त लोगों को उपलब्ध करने हेतु उनको निर्धारित तिथि पर उपस्थित होने के उद्देश्य से कुछ सप्ताह पहले घोषणापत्र प्रकाशित कर दे। उन विज्ञापनों का सारा खर्च विशेषत: मेरे ज़िम्मे होगा। [①]और जो कष्टग्रस्त लोगों की दो सूचियाँ तैयार होंगी उनकी एक-एक प्रतिलिपि कमेटी भी अपने कार्यालय में रखेगी और यही दिन निर्धारित वर्ष में से प्रथम दिन गिना जाएगा। प्रत्येक पक्ष अपने भाग के कष्टग्रस्त लोगों के लिए दुआ करता रहेगा और नियमानुसार सारी कार्यवाही कमेटी के रजिस्टर में दर्ज होती रहेगी और अगर एक साल की अवधि में या उससे पूर्व जब दुआओं के अधिक क़ुबूल होने और स्पष्ट विजय का अन्दाज़ पैदा होने लगे, कोई वादी मृत्यु पा जाए और अपने मुक़ाबला के पूरे विषय को अधूरा छोड़ जाए तब भी वह पराजित समझा जाएगा, क्योंकि ख़ुदा तआला ने अपनी विशेष इच्छा से उसके काम को अधूरा रखा ताकि उसका असत्य पर होना स्पष्ट कर दे। कष्टग्रस्त लोगों की अधिक संख्या होना इसलिए शर्त ठहराई गयी है कि दुआ के क़ुबूल होने की परीक्षा केवल लोगों के अधिक होने की दृष्टि से ही हो सकती है अन्यथा जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं यह सम्भव है कि अगर दुआ कराने वाले उदाहरण के तौर पर केवल दो या तीन व्यक्ति हों और वे अपनी नाकामी में अटल तक़्दीर रखते हों अर्थात ख़ुदा की इच्छा में निश्चित तौर पर यही निर्णय हो कि ये कदापि अपने कष्टों से मुक्ति नहीं पाएँगे, प्राय: ऐसा संयोग कभी-कभी बड़े-बड़े औलिया और अम्बिया (ऋषियों और अवतारों) को होता रहा है कि उनकी दुआओं के प्रभाव से कुछ लोग वंचित रहे। इसका यही कारण था कि वे लोग अपनी नाकामी में अटल तक़्दीर रखते थे। इसलिए एक या

---

① नोट- सार्वजनिक जलसे में इस तहरीर के पढ़े जाने पर मेरे धर्म भाई मौलवी ग़ुलाम क़ादिर साहिब फ़सीह मालिक व संचालक अख़बार पंजाब गज़ट स्यालकोट ने लिखित रूप से कहा कि इन घोषणा-पत्रों के छपने और प्रकाशित होने का सारा खर्च मेरे ज़िम्मे रहेगा। लेखक

दो कष्टग्रस्तों को आज़माइश का पैमाना ठहराना एक धोखा देने वाला तरीक़ा है और हो सकता है कि वे अपनी नाकामी में अटल तक़्दीर रखते हों। अतः यदि वे दुआ के लिए किसी मान्य के पास आयें और अपनी अटल तक़्दीर के कारण नाकाम रहें तो इस दशा में उस मान्य की दुआ क़बूल होने का रहस्य उन पर नहीं खुलेगा बल्कि संभव है कि वे अपने विचार को बद्ज़न्नी (कुधारणा) की ओर खींच कर उस मान्य से निष्ठाहीन हो जाएँ और अपनी दुनिया के साथ अपना अन्त भी ख़राब कर लें, क्योंकि आज़माइश के इस ढंग में कई लोगों ने नबियों के समय में भी ठोकरें खाई हैं और मुर्तद (धर्मभ्रष्ट) होने तक नौबत पहुँची है और यह बात ज्ञान की मा'रिफ़त का एक रहस्य है कि मान्य लोगों की मान्यता अधिक दुआओं के स्वीकार होने से पहचानी जाती है अर्थात् उनकी अधिकतर दुआएँ क़ुबूल हो जाती हैं न यह कि सब की सब क़ुबूल होती हैं। अतएव जब तक आने वालों की संख्या अधिक न हो जाए तब तक क़ुबूलियत का पता नहीं लग सकता और अधिकता की पूर्ण सच्चाई और महानता उस समय पूर्णतः स्पष्ट होती है कि जब किसी पूर्ण मोमिन कि जिसकी दुआएं स्वीकार होती हों का उसके प्रतिद्वन्दी से मुक़ाबला किया जाए, अन्यथा सम्भव है कि एक दुष्ट आलोचक की दृष्टि में वह बहुलता भी कम दिखाई दे। इसलिए वस्तुतः दुआओं का अधिक क़ुबूल होना एक अपेक्षाकृत विषय है जिसकी उचित, सच्ची और वास्तविक पहचान जो इन्कार करने वाले के मुँह को बन्द करने वाली हो मुक़ाबला से ही प्रकट होती है। उदाहरणतः अगर हज़ार-हज़ार कष्टग्रस्त लोग दो ऐसे लोगों के हिस्से में आ जाएँ जिनको पूर्ण मोमिन और दुआ के स्वीकार होने का दावा है और एक व्यक्ति की क़ुबूलियत-ए-दुआ का यह प्रभाव हो कि हज़ार में से पचास या पच्चीस ऐसे शेष रह जाएँ जो नाकाम हों और शेष सब कामयाब हो जाएँ और दूसरे गिरोह में लगभग पच्चीस या पचास कामयाब हों और शेष सब नामुरादी के रसालत में चले जाएँ तो मान्य और धिक्कृत में स्पष्ट अन्तर हो जायेगा। इस युग का

नेचुरी इन भ्रान्तियों और भ्रमों में ग्रस्त लगता है जब कि प्रारम्भ से क़ुदरत ने होनी और अनहोनी विषयों में विभाजन कर रखा है इस लिए दुआ क़ुबूल होना कुछ चीज़ ही नहीं। परन्तु ये भ्रान्तियाँ पूर्णत: व्यर्थ हैं और वास्तविकता यही है कि जैसे स्वच्छन्द हकीम ख़ुदा ने दवाओं में प्रकृति की नियमबद्धता के अतिरिक्त भी प्रभाव रखे हैं ऐसे ही दुआओं में भी प्रभाव हैं जो हमेशा उचित अनुभवों से साबित होते हैं और जिस मुबारक हस्ती जो समस्त कारणों का कारण है ने दुआ के क़ुबूल करने को अनादि काल से अपना नियम ठहराया है उसी पुनीत हस्ती का यह भी नियम है कि जो कष्टग्रस्त लोग ख़ुदा की दृष्टि में रिहाई योग्य ठहर चुके हैं वे उन्हीं लोगों की पवित्र फूंकों या दुआ और ध्यान या उनके धरती पर मौजूद होने की बरकत से रिहाई पाते हैं जो ख़ुदा के सामीप्य और स्वीकारिता के सम्मान से सम्मानित हैं। हालाँकि दुनिया में बहुत से लोग मूर्तिपूजक भी हैं जो अपने कष्टों के समय पूर्ण मोमिन की ओर ध्यान भी नहीं देते और ऐसे भी हैं जो दुआ के क़ुबूल होने को स्वीकार ही नहीं करते और पूर्णत: उपायों और संसाधनों पर भरोसा रखते हैं। उनके जीवन की घटनाओं पर दृष्टि डालने से शायद एक सरसरी सोच का आदमी इस धोखे में पड़ेगा कि उनकी परेशानियाँ भी तो हल होती हैं। फिर यह बात कैसे स्पष्ट रूप से साबित हो सकती है कि मान्य लोगों की दुआएं ही अधिक क़ुबूल होती हैं। इस भ्रान्ति का उत्तर जो क़ुरआन करीम में वर्णित है यह है कि अगर कोई व्यक्ति अपनी मुरादों की पूर्ति के लिए मूर्ति की ओर ध्यान लगाए या दूसरे देवताओं की ओर या अपने उपायों की ओर, परन्तु वास्तविक रूप से ख़ुदा तआला का पवित्र क़ानून-ए-क़ुदरत यही है कि यह सारी बातें मान्य लोगों के ही अस्तित्व के कारण होती हैं और उनके पवित्र वचनों और उनकी बरकतों से यह संसार आबाद हो रहा है। उन्हीं की बरकत से वर्षाएँ होती हैं और उन्हीं की बरकत से संसार में अमन रहता है और महामारियाँ दूर होती हैं और फ़साद मिटाए जाते हैं और उन्हीं की बरकत से दुनियादार लोग अपने

उपायों में सफल होते हैं और उन्हीं की बरकत से चाँद निकलता है और सूरज चमकता है। वे संसार के प्रकाश हैं। जब तक वे अपने अस्तित्व की दृष्टि से दुनिया में हैं, दुनिया प्रकाशमान है और उनके अस्तित्व के अन्त के साथ ही दुनिया का अन्त हो जाएगा क्योंकि **दुनिया के वास्तविक सूरज और चाँद वही हैं**। इस वर्णन से स्पष्ट है कि लोगों की मुरादों का पूरा होना ही नहीं बल्कि जीवन का आधार वही लोग हैं और मनुष्य क्या प्रत्येक सृष्टि के स्थायित्व और जीवन का आधार और उद्देश्य वही हैं। अगर वे न हों तो फिर देखो कि मूर्तियों से क्या प्राप्त होगा और उपायों से क्या फ़ायदा होगा। यह एक सूक्ष्म गूढ़ रहस्य है जिसके समझने के लिए केवल इस दुनिया की बुद्धि काफी नहीं बल्कि उस प्रकाश की आवश्यकता है जो आध्यात्म ज्ञान रखने वालों को मिलता है। वस्तुतः यह सारे भ्रम मुक़ाबले से दूर हो जाते हैं क्योंकि मुक़ाबले के समय ख़ुदा तआला एक विशेष इरादा करता है ताकि वह जो ख़ुदा तआला की ओर से सच्ची क़ुबूलियत और सच्ची बरकत रखता है उसी की प्रतिष्ठा प्रकट हो, अगर मूर्ति पूजक एकेश्वरवादी से मुक़ाबला करे और दुआ के क़ुबूल होने में एक दूसरे की आज़माइश करे तो मूर्तिपूजक अत्यधिक शर्मिन्दा और अपमानित हो। इसी कारण से मैंने पहले भी कह दिया है कि पूर्ण मोमिन की आज़माइश के लिए जितना सरल तरीक़ा मुक़ाबला है उतना दूसरा कोई तरीक़ा नहीं। जिस बारे में पूर्ण मोमिन की दुआ क़ुबूल न हो और ईशवाणियों से उसको अस्वीकृति की ख़बर दी जाए। फिर अगर उस काम के लिए यूरोप और अमेरिका के समस्त उपाय लगा दिए जाएँ या दुनिया के तमाम् बुतों के आगे सिर रगड़ा जाए या अगर सारी दुनिया अपनी-अपनी दुआओं में इस विषय में सफलता चाहे तो यह असम्भव होगा। हालाँकि पूर्ण मोमिन का वरदान समस्त संसार में प्रचलित होता है और उसी की बरकत से दुनिया का कारखाना चलता है और वह परोक्ष तौर पर प्रत्येक के लिए मुरादों की प्राप्ति का माध्यम होता है चाहे कोई उसको पहचाने या न पहचाने, लेकिन जो लोग

विशेष रूप से श्रद्धा और विश्वास के साथ उसकी ओर आते हैं वे न केवल उसकी बरकत से दुनिया की मुरादें पाते हैं बल्कि अपना धर्म भी ठीक कर लेते हैं और अपने ईमानों को मज़बूत कर लेते हैं और अपने पालनहार को पहचान लेते हैं और अगर वे वफ़ादारी से पूर्ण मोमिन की छत्र छाया में पड़े रहें और बीच से भाग न जाएँ तो बहुत से आसमानी निशानों को देख लेते हैं।

मैंने इस लेख में जो विभिन्न प्रकार के कष्टग्रस्त लोगों का होना शर्त के तौर पर लिखा है यह इस लिए लिखा है ताकि सामान्य तौर पर भिन्न-भिन्न प्रकार की परिस्थितियों में ख़ुदा तआला की रहमत प्रकट हो और हर एक स्वभाव और रुचि का आदमी उसको समझ सके और विभिन्न प्रकार के कष्टग्रस्त लोग निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं। उदाहरणतया अगर कोई भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों में ग्रस्त हो और कोई किसी अकारण की सज़ा में फँस गया हो या फँसने वाला हो या किसी का प्रिय पुत्र खो गया हो या कोई स्वयं नि:सन्तान हो या कोई समृद्धि और प्रतिष्ठा के बाद दयनीय अपमान में पड़ा हो और कोई किसी अत्याचारी के पंजे में गिरफ़्तार हो और कोई सामर्थ्य से बढ़कर और अत्यधिक क़र्ज़ की मुसीबत से मृत्यु के निकट हो और किसी के जिगर का टुकड़ा इस्लाम से मुर्तद हो गया हो और कोई किसी ऐसे दु:ख और बेचैनी में गिरफ़्तार हो जिसको हम इस समय वर्णन नहीं कर सके।

चौथी निशानी:- क़ुरआन के आध्यात्म ज्ञानों का खुलना, उसमें सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि हर एक पक्ष क़ुरआन करीम की कुछ आयतों के ज्ञान और रहस्य लिखकर कमेटी के सामने सार्वजनिक जलसा में सुनाए फिर जो कुछ किसी पक्ष ने लिखा है अगर वह किसी पहली व्याख्या की किताब में लिखा हुआ साबित हो जाए तो यह व्यक्ति केवल नकलकर्ता ठहराया जाकर दण्ड का भागी हो, लेकिन अगर उसकी बयान की हुई सच्चाइयाँ और आध्यात्म ज्ञान जो दोनों अपने आप में सत्य और शंकारहित भी हों और ऐसे

नए-नए वर्णित हों कि पहले भाष्यकारों के दिमाग़ उनकी ओर गए ही न हों और इन सबके बावजूद वे अर्थ हर प्रकार की बनावट से शुद्ध और क़ुरआन करीम के चमत्कार और पूर्ण श्रेष्ठता और शान को प्रकट करते हों और अपने अन्दर एक प्रताप एवं धाक और सच्चाई की ज्योति रखते हों, तो समझना चाहिए कि वे ख़ुदा तआला की ओर से हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने मान्य व्यक्ति के सम्मान और क़बूलियत और योग्यता प्रकट करने के लिए अपने लदुन्नी ज्ञानों (वे ज्ञान जो ईश्वर प्रदत्त हों) से प्रदान किए हैं।

ये आज़माइश की चार कसौटियाँ जो मैंने लिखी हैं ये ऐसी सीधी और स्पष्ट हैं कि जो व्यक्ति ध्यानपूर्वक इनको पढ़ेगा वह निःसन्देह इस बात को स्वीकार कर लेगा कि दोनों प्रतिद्वन्द्वियों के फ़ैसले के लिए इससे स्पष्ट और सरलतम् दूसरा कोई आध्यात्मिक तरीक़ा नहीं और मैं इक़रार करता हूँ और ख़ुदा तआला की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि अगर मैं इस मुक़ाबले में हार गया तो अपने असत्य पर होने का स्वयं इक़रार प्रकाशित कर दूँगा और फिर मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब और शेख बटालवी द्वारा काफ़िर और झूठा कहने की ज़रूरत नहीं रहेगी और इस दशा में हर एक अपमान और बदनामी और तिरस्कार का पात्र एवं दण्डनीय ठहरूँगा तथा उसी जलसे में इक़रार भी कर दूँगा कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हूँ और मेरे समस्त दावे झूठे हैं परन्तु ख़ुदा की क़सम मैं पूर्ण विश्वास रखता हूँ और देख रहा हूँ कि मेरा ख़ुदा कदापि ऐसा नहीं करेगा और कभी मुझे बर्बाद नहीं होने देगा। अब **उपरोक्त विद्वानों** का इस स्पष्ट और खुली-खुली परीक्षा से पीठ फेरना (अगर वे पीठ फेरें) न केवल अन्याय होगा बल्कि मेरे विचार के अनुसार वे इस समय चुप रहने से या केवल छलपूर्ण और झूठे जवाबों पर सन्तुष्ट होकर बैठने से बुद्धिमान लोगों को अपने ऊपर अत्यन्त बदज़न कर लेंगे। अगर वे इस समय ऐसे व्यक्ति के सामने जो सच्चे दिल से मुक़ाबला के लिए मैदान में खड़ा है केवल बहाने बाज़ी से भरा हुआ कोई बनावटी जवाब देंगे तो याद रखें कि

कोई सत्याभिलाषी और सत्यप्रिय ऐसे जवाब को पसन्द नहीं करेगा, अपितु न्यायकर्ता उसको अफ़सोस की दृष्टि से देखेंगे। संभव है कि किसी के दिल में यह विचार उत्पन्न हो कि जो व्यक्ति **मसीह मौऊद** होने का दावेदार हो वह क्यों स्वयं एक तरफ़ा तौर पर ऐसे निशान नहीं दिखाता जिनसे लोग संतुष्ट हो जाएँ। इसका जवाब यह है कि यह सारे लोग विद्वानों के अधीन हैं और विद्वानों ने अपने घोषणा-पत्रों के द्वारा लोगों में यह बात फैला दी है कि यह व्यक्ति काफ़िर और दज्जाल है चाहे कितने ही निशान दिखाए, तो भी स्वीकार योग्य नहीं। अतः शेख़ बटालवी ने अपने एक लम्बे विज्ञापन में जिसको उसने लुधियाना की बहस के बाद प्रकाशित किया है यही बातें साफ-साफ लिख दी हैं और पूर्णतः इनकार और शत्रुतापूर्वक इस विनीत के बारे में बयान किया है कि यह व्यक्ति जो आसमानी चमत्कारों के दिखाने की ओर बुलाता है उसके इस बुलावे की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए, क्योंकि निशान तो इब्ने सय्याद से भी प्रकट होते थे और कथित दज्जाल भी दिखाएगा, फिर निशानों का क्या भरोसा है ? इसके अतिरिक्त मैं यह भी सुनता हूँ और अपने विरोधियों के विज्ञापनों में पढ़ता हूँ कि वे मेरे एकतरफ़ा निशानों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं और केवल उद्दण्डता करते हुए कहते हैं कि अगर यह व्यक्ति कोई सच्चा स्वप्न बताता है या कोई इल्हामी भविष्यवाणी बयान करता है तो इन बातों में इसकी विशेषता क्या है ? काफ़िरों को भी सच्चे स्वप्न आ जाते हैं बल्कि कभी उनकी दुआएँ भी क़ुबूल हो जाती हैं कभी उनको पहले से कोई बात भी ज्ञात हो जाती है, कई क़समें खाकर कहते हैं कि यह बात तो हमें भी ज्ञात है परन्तु यह नहीं जानते कि केवल एक रुपया से भिखारी मालदार नहीं कहला सकता और थोड़ी सी चमक से जुगनू को सूरज नहीं कह सकते परन्तु बिना तुलना के ये लोग किसी तरह समझ नहीं सकते। तुलना के समय इन्हें अधिकार है कि अगर स्वयं विवश हो जाएँ तो दस बीस काफ़िर ही अपने साथ शामिल कर लें। अतः जब मौलवियों ने एकतरफ़ा निशानों को स्वीकार

ही नहीं किया और मुझे काफ़िर ही ठहराते हैं और मेरे निशानों को काफ़िर से प्रकट होने वाले निशानों में दाख़िल करते या गिरी नज़र से देखते हैं तो फिर एकतरफ़ा निशानों से क्या प्रभाव पड़ेगा और लोग जिनके दिल और कान ऐसी बातों से भर दिए गए हैं, ऐसे निशानों से कैसे संतुष्ट होंगे, परन्तु ईमानी निशानों के दिखाने की परस्पर तुलना, एक ऐसा साफ और स्पष्ट विषय है कि इसमें विद्वानों का कोई बहाना भी नहीं चल सकता और विद्वानों के समक्ष खुले-खुले तौर पर जितना सच प्रकट होता है ऐसा कोई दूसरा उपाय सच के प्रकट होने का नहीं। हाँ अगर ये लोग इस तुलना से लाचार हों तो फिर उन पर अनिवार्य है कि अपनी ओर से अपनी सहमति की मुहरें लगाकर एक विज्ञापन प्रकाशित कर दें कि हम मुक़ाबला नहीं कर सकते और पूर्ण मोमिनों की निशानियाँ हम में नहीं पाई जातीं और यह भी लिख दें कि हम यह भी स्वीकार करते हैं कि इस व्यक्ति अर्थात् इस विनीत के निशानों को देखकर निःसंकोच स्वीकार कर लेंगे और लोगों को स्वीकार करने के लिए विनती भी कर देंगे और दावा को भी स्वीकार कर लेंगे और काफ़िर ठहराने के शैतानी षड्यंत्रों से रुक जायेंगे और इस विनीत को पूर्ण मोमिन समझ लेंगे, तो इस दशा में यह विनीत वचन देता है कि अल्लाह तआला की कृपा से एकतरफ़ा निशानों का सुबूत उनको देगा, और आशा रखता है कि शक्तिशाली और सामर्थ्यवान ख़ुदा उनको अपने निशान दिखाएगा और अपने भक्त का सहायक और मददगार होगा और यथार्थ एवं सच्चाई के साथ अपने वादों को पूरा करेगा, परन्तु अगर वे लोग ऐसे लेख प्रकाशित न करें तो फिर हर हाल में मुक़ाबला ही उत्तम है ताकि उनकी यह सोच और यह घमण्ड कि हम पूर्ण मोमिन, प्रकाण्ड विद्वान और युग के लिए अनुकरणीय हैं और ईशवाणी और ख़ुदा के संवाद से सम्मानित हैं और यह व्यक्ति काफ़िर और दज्जाल और कुत्ते से अधिक बुरा है, अच्छी तरह निर्णय पा जाए। इस मुक़ाबले में एक यह भी फ़ायदा है कि जो फ़ैसला हमारी ओर से एकतरफ़ा तौर पर एक लम्बी अवधि को चाहता है

वह मुक़ाबले की दशा में केवल थोड़े ही दिनों में हो जाएगा। इसलिए यह मुक़ाबला, इस विवादित विषय के फैसला करने के लिए कि वास्तविक रूप से मोमिन कौन है और काफ़िरों का चरित्र कौन अपने अन्दर रखता है बहुत सरल और निकटस्थ उपाय है। इस से विवाद का शीघ्र अन्त हो जाएगा, मानो सैकड़ों कोस की दूरी एक क़दम पर आ जाएगी और ख़ुदा तआला का स्वाभिमान बहुत जल्द दिखा देगा कि मूल वास्तविकता क्या है और इस मुक़ाबले का एक बड़ा फ़ायदा यह है कि इसमें दोनों पक्षों को अलोचना करने की कोई गुंजाइश नहीं रहती और न व्यर्थ के हीले बहाने कुछ काम आते हैं, परन्तु एकतरफ़ा निशानों में प्रतिशोधी की अलोचना भोली-भाली जनता को धोखे में डालती है। जानने वाले यह भी जानते हैं कि इस विनीत से आज तक बहुत से एकतरफ़ा निशान प्रकट हो चुके हैं जिनके देखने वाले जीवित मौजूद हैं परन्तु क्या सबूत देने के बावजूद विद्वान उनको मान लेंगे, कदापि नहीं, यह भी याद रहे कि ये सारी बातें और तरीक़ा जो अपनाया गया है यह केवल उन इन्कार करने वालों का फैसला जल्द करने के उद्देश्य से और वाद-विवाद में तर्क द्वारा मुँह बन्द करने और चुप करने के विचार से तथा उन पर अकाट्य तर्क पूरा करने के उद्देश्य से और सच्चाई की पूर्ण झलक दिखाने की नीयत से और उस संदेश को पहुँचाने के लिए है जो इस विनीत को ख़ुदा की ओर से दिया गया है अन्यथा निशानों का प्रकट होना उनके मुक़ाबले पर आधारित नहीं। निशानों का सिलसिला तो प्रारम्भ से जारी है और हर एक संगति में रहने वाला अगर सच्ची नीयत और धैर्य से रहे तो कुछ न कुछ देख सकता है और भविष्य में भी ख़ुदा तआला इस सिलसिले को बिना निशान के नहीं छोड़ेगा और न अपने समर्थन से हाथ खींचेगा अपितु जैसा कि उसके पवित्र वादे हैं वह अवश्य यथासमय ताज़ा और नवीन निशान दिखाता रहेगा यहां तक कि वह अपने तर्क को पूरा करे और पवित्र-अपवित्र में अन्तर स्पष्ट करके

दिखाए। उसने स्वयं अपने **संवाद** में इस विनीत के बारे में कहा है कि दुनिया में एक नज़ीर (सचेतक) आया, परन्तु दुनिया ने उसको क़बूल न किया लेकिन ख़ुदा उसको क़ुबूल करेगा और बड़े शक्तिशाली हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा, और मैं कभी सोच भी नहीं सकता कि वे हमले बिना हुए रह जाएँगे यद्यपि उनका होना मेरे वश में नहीं। मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि मैं सच्चा हूँ। प्यारो ! निःसन्देह समझो कि जब तक आसमान का ख़ुदा किसी के साथ न हो वह ऐसी बहादुरी कभी नहीं दिखाता कि एक दुनिया के मुक़ाबले पर दृढ़ता के साथ खड़ा हो जाए और उन बातों का दावा करे जो उसके वश से बाहर हैं। जो व्यक्ति पूरी शक्ति और धैर्य के साथ एक दुनिया के मुक़ाबले पर खड़ा हो जाता है, क्या वह स्वयं से खड़ा हो सकता है? कदापि नहीं, अपितु वह उस सर्वशक्तिमान की शरण से और एक अलौकिक हाथ की सहायता से खड़ा होता है जिसके अधिकार में समस्त धरती और आकाश और हर एक आत्मा और शरीर है। अतः आँखें खोलो और समझ लो कि उस ख़ुदा ने मुझ असहाय को यह शक्ति और धैर्य दिया है जिसके संवाद से मुझे सौभाग्य प्राप्त है। उसी की ओर से और उसी के खुले-खुले आदेश से मुझे यह साहस हुआ कि मैं उन लोगों के मुक़ाबले पर बड़ी दिलेरी और पूरी दृढ़ता से खड़ा हो गया। जिनका यह दावा है कि हम अनुकरणीय और अरब और ग़ैर अरब वासियों के गुरू और अल्लाह के सानिध्य प्राप्त हैं जिनमें वह वर्ग भी मौजूद है जो मुल्हम (ईशवाणी प्राप्तकर्ता) कहलाता है और ख़ुदा से संवाद का दावा करता है और अपने विचारनुसार इल्हामी तौर पर मुझे काफ़िर और नारकी ठहरा चुके हैं। इसलिए मैं उन सब के मुक़ाबले पर ख़ुदा तआला के आदेश से मैदान में आया हूँ ताकि ख़ुदा तआला सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखाए और उसका हाथ झूठे को रसातल तक पहुँचाए ताकि वह उस व्यक्ति की सहायता करे जिस पर उसकी

कृपा और दया है। **अतएव भाइयो** देखो कि यह आमन्त्रण जिसकी ओर मैं मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब और उनकी जमाअत को बुलाता हूँ वास्तव में यह मेरे और उनके मध्य स्पष्ट तौर पर फैसला करने का मार्ग है। अतः मैं इस मार्ग पर खड़ा हूँ। अब अगर इन विद्वानों की दृष्टि में मैं क़ाफ़िर और दज्जाल और झूठा और शैतान का लुटा हुआ हूँ तो मेरे मुकाबले पर आने के लिए उन्हें क्यों संकोच करना चाहिए। क्या उन्होंने क़ुरआन करीम में नहीं पढ़ा कि मुक़ाबले के समय ख़ुदा की मदद मोमिनों के ही साथ होती है। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है:-

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (آل عمران:140)

हे मोमिनो ! मुक़ाबले से हिम्मत मत हारो और कुछ सन्देह मत करो परिणामस्वरूप जीत तुम्हारी ही है अगर तुम वास्तविक तौर पर मोमिन हो।

फिर फ़रमाता है:-

وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا (النساء:142)

ख़ुदा तआला क़ाफ़िरों को कदापि मोमिनों पर विजय प्रदान नहीं करेगा।

अतएव देखो ख़ुदा तआला ने क़ुरआन करीम में मुक़ाबला के समय मोमिनों को जीत की ख़ुशख़बरी दे रखी है और स्वयं स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला मोमिनों का ही सहायक और मददगार होता है झूठे का कदापि मददगार और सहायक नहीं हो सकता। इसलिए जिसका ख़ुदा तआला स्वयं दुश्मन हो और जानता है कि वह झूठा है, ऐसा अयोग्य आदमी किस प्रकार मोमिन के मुक़ाबले पर ईमान की विशेष निशानियों से सम्मानित हो सकता है। भला यह कैसे हो सकता है कि जो लोग ख़ुदा तआला के प्यारे दोस्त और सच्चे इल्हामों के उत्तराधिकारी और पूर्ण मोमिन और सब के गुरू हों वे तो मुक़ाबला के समय ईमानी निशानों से वंचित रह जाएँ और बड़े अपमान के साथ उनके दोषों से परदा उठाया जाए और ख़ुदा तआला जानबूझ कर उनकी महानता और प्रतिष्ठा को अघात पहुँचाए, परन्तु वह जो ख़ुदा की

ओर से धिक्कृत और शेख बटालवी के कथनानुसार कुत्तों जैसा और काफ़िर और दज्जाल और मियाँ नज़ीर हुसैन के कथनानुसार ईमान से पूर्णतया वंचित, नास्तिक और हर एक प्राणी से निकृष्टतम् हो उसमें ईमान के निशान पाए जाएँ और ख़ुदा तआला मुक़ाबला के समय उसी को विजयी और सफल करे। ऐसा होना तो कदापि सम्भव नहीं।

पाठको आप लोग ईमानदारी से बताओ कि क्या आसमानी और आध्यात्मिक मदद मोमिनों के लिए होती है या काफ़िरों के लिए? इस सारे कथन में मैंने सिद्ध कर दिया है कि सच और झूठ में ख़ुला-खुला अन्तर स्पष्ट करने के लिए तुलना की नितान्त आवश्यकता है। ताकि

تا سیہ روئے شود ہر کہ دروغش باشد ①

मैंने हज़रत शैखुलकुल (नज़ीर हुसैन देहलवी) साहिब और उनके शिष्यों की गालियों पर बहुत सब्र किया और सताया गया और ख़ुद को रोकता रहा। अब मैं मामूर (अवतार) होने के कारण अल्लाह की इस बात की ओर शैख़ुल-कुल साहिब और उनके मतावलंबियों को बुलाता हूँ और विश्वास रखता हूँ कि ख़ुदा तआला इस विवाद का स्वयं फैसला कर देगा। वह दिलों की भावनाओं को जाँचता और सीनों के हालात को परखता है और किसी का हृदय को कष्ट देना, अत्याचार और बुराई के प्रकटन को पसन्द नहीं करता वह निःस्पृह है। मुत्तक़ी (परहेज़गार) वही है जो उससे डरे। मेरा इसमें क्या अपमान है अगर कोई मुझे कुत्ता कहे या काफ़िर-काफ़िर और दज्जाल कहकर पुकारे। वस्तुतः सच्चे तौर पर इंसान का क्या सम्मान है? केवल उसकी दिव्यज्योति की छाया पड़ने से सम्मान प्राप्त होता है। अगर वह मुझ से खुश नहीं और मैं उसकी दृष्टि में निकृष्ट हूँ तो फिर कुत्ते की तरह क्या अपितु कुत्तों से हज़ारों गुना निकृष्टतम हूँ।

---

① जिस का झूठ साबित हो जाए उस का मुँह काला हो।

گرخدا ازبندۂ خوشنود نیست　　ہیچ حیوانے چو او مردُود نیست
گرسگ نفس دنی را پروریم　　ازسگانِ کوچہ ہا ہم کم تریم
اے خدا اے طالبان را رہنما　　ایکہ مہر تو حیاتِ روح ما
بر رضائے خویش کن انجام ما　　تا براید در دو عالم کام ما
خلق و عالم جملہ در شور و شراند　　طالبانت در مقام دیگر اند
آن یکے را نورمے بخشی بدل　　واں دِگر را می گزاری پابگل
چشم و گوش و دل زِ تو گیرد ضیاء　　ذات تو سرچشمۂ فیض و ہُدا①

अत: सर्वशक्तिमान ख़ुदा मेरा आश्रय है और मैं अपना सारा काम उसी को सौंपता हूँ और गलियों के बदले गालियाँ देना नहीं चाहता और न कुछ कहना चाहता हूँ। एक ही है जो कहेगा। अफ़सोस कि इन लोगों ने थोड़ी सी बात को बहुत दूर डाल दिया और ख़ुदा तआला को इस बात पर समर्थ न समझा, कि जो चाहे करे और जिसको चाहे अवतार बनाकर भेजे। क्या मनुष्य उससे लड़ सकता है या मनुष्य को उस पर आपत्ति करने का अधिकार है

---

* ①–●–अगर ख़ुदा भक्त से खुश नहीं है तो उस जैसा कोई जानवर भी तिरस्कृत नहीं।

●–अगर हम अपनी नीच इच्छाओं को तृप्त करने में लगे रहें तो हम गलियों के कुत्तों से भी निकृष्ट हैं।

●–हे ख़ुदा! हे भक्तों के मार्गदर्शक, तेरी मुहब्बत हमारे जीवन की रूह है।

●–तू हमारा अन्त अपनी ख़ुशी पर कर ताकि दोनों लोक में हमारी मुराद पूरी हो।

●–संसार और उसके लोग उपद्रव और कोलाहल में लगे हुए हैं परन्तु तेरे चाहने वाले और ही स्थान पर हैं।

●–उनमें से एक के दिल को तू ज्योति प्रदान करता है और दूसरे को कीचड़ में फँसा हुआ छोड़ देता है।

●–आँख, कान और दिल तुझ से ही ज्योति प्राप्त करते हैं, तेरा अस्तित्व हिदायत और भलाइयों का मुख्य स्रोत है।

---

* नोट :– प्रस्तुत अनुवाद अनुवादक की ओर से है। (अनुवादक)

कि तूने ऐसा क्यों किया, ऐसा क्यों नहीं किया? क्या वह इस बात पर समर्थ नहीं कि एक की शक्ति और स्वभाव दूसरे को प्रदान करे और एक का रंग और हाल दूसरे में पैदा कर दे और एक के नाम से दूसरे को बुलाए। अगर मनुष्य को ख़ुदा तआला के सर्वशक्तिमान होने पर ईमान हो तो वह तुरन्त इन बातों का यही उत्तर देगा कि हाँ निःसन्देह प्रतापी ख़ुदा हर एक बात पर समर्थ है और अपनी बातों और अपनी भविष्यवाणियों को जिस तर्ज़ और ढंग और जिस अंदाज़ से चाहे पूरा कर सकता है। पाठको! तुम स्वयं ही सोचकर देखो कि क्या **आने वाले ईसा** के बारे में किसी स्थान पर यह भी लिखा था कि वह वास्तविक रूप से वही बनी इस्राईली नासिरी, इन्जील वाला होगा? बल्कि हदीस की किताब **बुख़ारी** में जो क़ुरआन शरीफ़ के पश्चात् सबसे विश्वसनीय तथा प्रमाणित पुस्तक कहलाती है इन बातों के बजाय امامکم منکم (अर्थात् तुम्हारा इमाम तुम में से होगा) लिखा है और मसीह की मृत्यु की गवाही दी है जिसकी आँखें हों देखे। न्याय करने वालो! सोच कर उत्तर दो कि क्या क़ुरआन करीम में कहीं यह भी लिखा है कि किसी समय कोई वास्तविक तौर पर सलीबें तोड़ने वाला और ज़िम्मियों (इस्लामी राज्य में रहने वाले ग़ैर मुस्लिमों) का वध करने वाला और सुअर के वध करने का नया आदेश लाने वाला और क़ुरआन करीम के कई आदेशों को निरस्त करने वाला पैदा होगा? क्या आयत

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ ①

और आयत

حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ ②

उस समय निरस्त हो जाएँगी और नई वह्यी (ईशवाणी) क़ुरआनी ईशवाणी को निरस्त कर देगी। हे लोगो ! हे मुसलमानों की औलाद कहलाने

① आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण कर दिया। (अनुवादक)

② यहाँ तक कि वे जिज़्या अदा करें। (अनुवादक)

वालो! क़ुरआन के दुश्मन न बनो और ख़ातमुन्नबिय्यीन के बाद नुबुव्वत की वह्यी का नया सिलसिला जारी न करो और उस ख़ुदा से शर्म करो जिसके सामने हाज़िर किए जाओगे। अन्ततः मैं पाठकों को बताना चाहता हूँ कि जिन बातों पर हज़रत मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब और उनकी जमाअत ने कुफ्र का फ़त्वा दिया है और मेरा नाम काफ़िर और दज्जाल रखा है और ऐसी गालियाँ दी हैं कि कोई सज्जन आदमी दूसरे क़ौम के आदमी के बारे में भी पसन्द नहीं करता और यह दावा किया है कि मानो यह बातें मेरी किताब **'तौज़ीह मराम'** और **'इज़ालः औहाम'** में दर्ज हैं। अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं बहुत जल्द ही एक स्थायी किताब में उन सब स्थानों को जिन पर एतराज़ किया जाता है लिखकर न्यायकर्ताओं को दिखाऊँगा कि क्या वास्तव में मैंने इस्लाम के अक़ीदा से मुँह फेरा है या इन्हीं की आँखों पर पर्दा और इन्हीं के दिलों पर मुहरें लगी हैं कि ज्ञान का दावा करने के बावजूद सच्चाई को पहचान नहीं सकते और उस पुल की तरह जो अचानक टूटकर हर तरफ एक सैलाब पैदा कर दे, लोगों की राह में रुकावट बन रहे हैं। याद रखो कि अन्ततः ये लोग बहुत शर्मिन्दगी के साथ अपने मुँह बन्द कर लेंगे और बड़ी शर्मिन्दगी और रुसवाई के साथ कुफ्र के जोश को छोड़ कर ऐसे ठण्डे हो जाएँगे कि जैसे कोई भड़कती हुई आग पर पानी डाल दे। इन्सान की तमाम् क़ाबिलियत और बुद्धिमानी और अक़्लमन्दी इसी में है कि समझाने से पहले समझे और बताने से पहले बात को समझ जाए। अगर अत्यधिक समझाने के बाद समझा तो क्या समझा? बहुतों पर शीघ्र ही वह ज़माना आने वाला है कि वे काफ़िर बनाने और ग़ालियाँ देने के बाद मुझे क़ुबूल करेंगे और कुधारणा और बदगुमानी के बाद फिर हुस्ने ज़न (सुधारणा) पैदा कर लेंगे। परन्तु कहाँ वह पहली बात और कहाँ यह।

اکنوں ہزار عذر بیاری گناہ را   مرشوی کردہ را نبود زیب دختری[1]

---

① अब तू अपनी ग़लती पर हज़ारों विवरण दे परन्तु विवाहित स्त्री के लिए कुँवारेपन का दावा शोभा नहीं देता। (अनुवादक)

इसलिए हे मेरी प्यारी क़ौम ! इस समय को वरदान समझ। यह तेरी सोच सही नहीं है कि इस शताब्दी के सर पर आसमान और ज़मीन के ख़ुदा ने अपनी ओर से कोई सुधारक न भेजा बल्कि काफ़िर और दज्जाल भेजा ताकि ज़मीन में फ़साद फैलाए। हे क़ौम ! नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी का लिहाज़ कर और ख़ुदा तआला से डर और उपकार को ठुकरा मत।

غافل مشو گر عاقلی دریاب گر صاحبدلی　　شاید کہ نتواں یافتن دیگر چنیں ایام را[1]

सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया।

नोट-उल्लिखित किताब 27 दिसम्बर सन् 1891 ई. को जुहर की नमाज़ के बाद क़ादियान की बड़ी मस्जिद में एक बड़ी सभा के सामने मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी ने पढ़ कर सुनाया और समाप्त होने के बाद यह राय उपस्थितजनों के सामने प्रस्तुत की गयी कि कमेटी के मेम्बर कौन-कौन से लोग बनाए जाएँ और किस प्रकार उसकी कार्यवाही शुरू हो। उपस्थितगणों में से जो केवल उपरोक्त राय पर विचार और विमर्श करने के लिए आए थे जिनके नाम नीचे लिखे जाएँगे एकमत होकर यह कहा कि पहले उपरोक्त किताब प्रकाशित कर दी जाए और विरोधियों के विचार मालूम करके दोनों पक्षों की सहमति के पश्चात् कमेटी के मेम्बर बनाए जाएँ और कार्यवाही आरम्भ की जाए। जो सहचरगण इस जलसे में उपस्थित हुए उनके नाम निम्नलिखित हैंः-

① अगर तू अक़्लमंद है तो बेसुध मत हो कि शायद फिर ऐसे दिन न मिल सकें। (अनुवादक)

1. मुंशी मुहम्मद अरोड़ा साहिब नक्शा नवीस कार्याल्य मजिस्ट्रेट कपूरथला व मुंशी मुहम्मद अब्दुर्रहमान साहिब लिपिक कार्यालय विभाग जरनैली कपूरथला
2. मुंशी मुहम्मद हबीबुर्रहमान प्रधान कपूरथला
3. मुंशी ज़फर अहमद साहिब अपील नवीस कपूरथला
4. मुंशी मुहम्मद ख़ान साहिब अहलमद फौजदारी कपूरथला
5. मुंशी सरदार ख़ान साहिब कोर्ट द.फ़ादार कपूरथला
6. मुंशी इमदाद अली ख़ान साहिब लिपिक शिक्षा विभाग कपूरथला
7. मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब कपूरथला
8. हाफ़िज़ मुहम्मद अली साहिब कपूरथला
9. मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब अध्यापक नवाब मालेरकोटला
10. मुंशी रुस्तम अली साहिब डिप्टी इन्सपेक्टर पुलिस रेलवे लाहौर
11. डिप्टी हाजी सैयद फ़तह अली शाह साहिब डिप्टी कलेक्टर अन्हार
12. हाजी ख़्वाजा मुहम्मद दीन साहिब रईस लाहौर
13. मियाँ मुहम्मद चट्टू साहिब रईस लाहौर
14. ख़लीफ़ा रजबुद्दीन साहिब कलर्क दफ्तर एक्ज़ामिनर लाहौर
15. मुंशी ताजुद्दीन साहिब एकाउन्टेंट दफ़्तर एक्ज़ामिनर लाहौर
16. मुंशी नबी बख़्श साहिब क्लर्क दफ्तर एक्ज़ामिनर लाहौर
17. हाफिज़ फ़ज़्ल अहमद साहिब क्लार्क दफ्तर एक्ज़ामिनर लाहौर
18. मौलवी रहीमुल्लाह साहिब लाहौर
19. मौलवी ग़ुलाम हुसैन साहिब इमाम मस्जिद गुम्टी लाहौर
20. मुंशी अब्दुर्रहमान साहिब क्लर्क लोको आफ़िस लाहौर
21. मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब मस्जिद चीनियाँ लाहौर
22. मुंशी करम इलाही साहिब लाहौर
23. सैयद नासिर शाह साहिब सब-ओवर्सियर
24. हाफ़िज़ मुहम्मद अक़्बर साहिब लाहौर
25. मौलवी ग़ुलाम क़ादिर साहिब फ़सीह मालिक व प्रबन्धक पंजाब प्रेस, व म्यून्सिपल कमिश्नर सियालकोट
26. मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोट
27. मीर हामिद शाह साहिब अहलमद मुआफ़ियात सियालकोट

28. मीर महमूद साहिब नक़ल नवीस सियालकोट
29. हक़ीम फ़ज़लदीन साहिब रईस भैरा
30. मियाँ नज्मुद्दीन साहिब रईस भैरा
31. मुंशी अहमदुल्ला साहिब मुहालदार विभाग परमिट जम्मू
32. सैयद मुहम्मद शाह साहिब रईस जम्मू
33. मिस्त्री उमरदीन साहिब जम्मू
34. मौलवी नूरुद्दीन साहिब हकीम विशेष रियासत जम्मू
35. ख़लीफ़ा नूरुद्दीन साहिब सहाफ़ जम्मू
36. क़ाज़ी मुहम्मद अकबर साहिब भूतपूर्व तहसीलदार जम्मू
37. शेख़ मुहम्मद जान साहिब मुलाज़िम राजा अमरसिंह साहिब वज़ीराबाद
38. मौलवी अब्दुल क़ादिर साहिब अध्यापक जमालपुर
39. शेख़ रहमतुल्लाह साहिब म्यूनिसिपल कमिश्नर गुजरात
40. शेख़ अब्दुल रहमान साहिब बी.ए. गुजरात
41. मुंशी ग़ुलाम अकबर साहिब यतीम क्लर्क एक्ज़ामिनर आफ़िस लाहौर
42. मुंशी दोस्त मुहम्मद साहिब सारजेन्ट पुलिस जम्मू
43. मुफ़्ती फ़ज़्लुर्रहमान साहिब रईस जम्मू
44. मुंशी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब पुत्र मौलवी दीन मुहम्मद लाहौर
45. साईं शेर शाह साहिब मजज़ूब जम्मू
46. साहिबज़ादा इफ़्तिख़ार अहमद साहिब लुधियाना
47. क़ाज़ी ख़्वाजा अली साहिब ठेकेदार शिकरम लुधियाना
48. हाफ़िज़ नूर अहमद साहिब कारख़ाना पशमीना लुधियाना
49. शाहज़ादा हाजी अब्दुल मजीद साहिब लुधियाना
50. हाजी अब्दुर्रहमान साहिब लुधियाना
51. शेख़ शहाबुद्दीन साहिब लुधियाना
52. हाजी निजामुद्दीन साहिब लुधियाना
53. शेख़ अब्दुल हक़ साहिब लुधियाना
54. मौलवी मुहकमुद्दीन साहिब मुख़्तार, अमृतसर
55. शेख़ नूर अहमद साहिब मालिक रियाज़ हिन्द प्रेस अमृतसर
56. मुंशी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब कातिब अमृतसर
57. मियाँ जमालदीन साहिब निवासी मौजा सेखवाँ
58. मियाँ इमामुद्दीन साहिब निवासी मौज़ा सेखवाँ

59. मियाँ खैरुद्दीन साहिब निवासी मौज़ा सेखवाँ

60. मौलवी मुहम्मद ईसा साहिब अध्यापक नौशहरा

61. मियाँ चिराग़ अली साहिब निवासी थिह ग़ुलाम नबी

62. शेख शहाबुद्दीन साहिब निवासी थिह ग़ुलाम नबी

63. मियाँ अब्दुल्लाह साहिब निवासी सोहल

64. दारोगा न्यामत अली साहिब हाशमी अब्बासी बटालवी

65. हाफ़िज़ हामिद अली साहिब मुलाज़िम मिर्ज़ा साहिब

66. हकीम जान मुहम्मद साहिब इमाम मस्जिद क़ादियानी

67. मिर्ज़ा इस्माईल बेग साहिब क़ादियानी

68. मियाँ बुड्ढ़े खान नम्बरदार बेरी

69. मिर्ज़ा मुहम्मद अली साहिब रईस पट्टी

70. हाफ़िज़ अब्दुर्रहमान साहिब निवासी सोहियां

71. बाबू अली मुहम्मद साहिब रईस बटाला

72. शेख मुहम्मद उमर साहिब पुत्र हाजी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब, बटाला

डाक्टर जगन्नाथ साहिब कर्मचारी रियासत जम्मू

को

आसमानी निशानों की ओर आमन्त्रण

मेरे निश्छल मित्र और धर्मनिष्ठ भाई हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब ख़ुदा की इच्छाओं पर प्राण निछावर करने वाले कर्मचारी व वैद्य रियासत जम्मू ने दिनाँक 7 जनवरी सन् 1892 ई. को इस विनीत के पास एक चिट्ठी भेजी है जिसका कुछ भाग नीचे लिखा जाता है और वह यह है:-

अति विनीत नूरुद्दीन की ओर से अति सेव्य हज़रत मसीहुज़्ज़मान सल्लमहुर्रहमान आप पर अल्लाह की रहमत और बरकत हो।

तत्पश्चात् शिष्टतापूर्ण निवेदन है कि, दीन दु:खियों पर दया करने वाले, परसों एक चिट्ठी सेवा में भेजी उसके पश्चात् यहाँ जम्मू में एक अजीब असभ्य उपद्रव की ख़बर पहुँची, जिसको आवश्यक समझते हुए विस्तारपूर्वक लिखना उचित समझता हूँ। इज़ाल: औहाम में हुज़ूर ने डाक्टर जगन्नाथ के बारे में लिखा है कि वह गुरेज़ कर गए। अब डाक्टर साहिब ने बहुत से ऐसे लोगों को जो इस विषय से अवगत थे कहा है कि स्याही से यह बात लिखी गयी है लाली से इस पर क़लम फेर दो, मैंने कदापि गुरेज़ नहीं किया और न कोई विशिष्ट निशान माँगा। मुर्दे को ज़िन्दा करना मैं नहीं मांगता और न सूखे हुए पेड़ का हरा होना, अर्थात् बिना किसी विशिष्टता के कोई निशान देखना

चाहता हूँ जो मानव शक्ति से बढ़कर हो।✯

अब पाठकों पर स्पष्ट हो कि पहले डाक्टर महोदय साहिब ने अपने एक पत्र में निशानों को विशिष्टता के साथ देखने की इच्छा प्रकट की थी जैसे कि मुर्दे को जीवित करना इत्यादि। इस पर उनकी सेवा में पत्र लिखा गया कि विशिष्टता के साथ किसी निशान को मांगना अनुचित है। ख़ुदा तआला अपने इरादा और रहस्यों के अनुसार निशान प्रकट करता है और जब निशान (चमत्कार) कहते ही उसको हैं जो मनुष्य की ताक़तों से बढ़कर हो तो फिर

✯ नोट- हज़रत मौलवी साहिब की मुहब्बत भरी विशेष चिट्ठी की कुछ पंक्तियाँ लिखता हूँ जिन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए ताकि ज्ञात हो कि कहाँ तक ख़ुदा तआला के रहमानी फ़ज़्ल से उनको संतोष, दृढ़सच्चाई और पूर्ण विश्वास प्रदान किया गया है वे पंक्तियाँ यह हैं:-

''श्रीमान् मिर्ज़ा जी मुझे अपने क़दमों में स्थान दो। अल्लाह की रज़ामन्दी चाहता हूँ और जिस तरह वह राज़ी हो सके तैयार हूँ। अगर आपके मिशन को मानवीय रक्त की सिंचाई की ज़रूरत है तो यह नीच (मगर भक्त) चाहता है कि उस काम में काम आए।'' उसका पत्र पूर्ण हुआ ख़ुदा उसे प्रतिफल प्रदान करे।

हज़रत मौलवी साहिब जो विनीतता, शिष्टता और बलिदान एवं धन-दौलत और प्रतिष्ठा के त्याग में लगे हुए हैं वह स्वयं नहीं बोलते बल्कि उनकी आत्मा बोल रही है। वास्तविक रूप से हम उसी समय सच्चे बन्दे कहला सकते हैं कि जो नेमतें देने वाले ख़ुदा ने हमें दिया है, हम उसको वापस दें या वापस देने के लिए तैयार हो जाएँ। हमारी जान (प्राण) उसकी अमानत है और वह फ़रमाता है कि

رُدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ①

سر کہ نہ در پائے عزیزش رود　　　بارِ گران ست کشیدن بدوش ②

इसी से

---

① तुम अमानतों को उसके हक़दार को लौटा दिया करो। (अनुवादक)

② वह सर जो उस के शुभ चरणों में न गिरे, उसे कंधों पर लिए फिरना असहनीय भार है। (अनुवादक)

विशिष्टता की क्या आवश्यकता है ? किसी निशान के आज़माने के लिए यही तरीक़ा काफ़ी है कि मानवीय शक्तियाँ उसका उदाहरण पैदा न कर सकें। इस पत्र का डाक्टर साहिब ने कोई उत्तर नहीं दिया था। अब फिर डाक्टर साहिब ने निशान देखने की इच्छा प्रकट की है और मेहरबानी करके अपनी पहली शर्त को उठा लिया है और केवल निशान चाहते हैं चाहे कोई भी निशान हो परन्तु मानवीय शक्तियों से बढ़कर हो। इसलिए आज की तिथि अर्थात् 11 जनवरी सन् 1892 ई. दिन सोमवार को डाक्टर साहिब की सेवा में पुन: दावते-हक़ के तौर पर रजिस्ट्री शुदा एक पत्र भेजा गया है जिसका यह लेख है कि अगर आप साधारणतया किसी निशान के देखने पर सच्चे दिल से मुसलमान होने के लिए तैयार हैं तो हाशिये में लिखित अख़बारों[①] में क़सम ख़ाकर अपनी ओर से यह इक़रार प्रकाशित कर दें कि मैं अमुक पुत्र अमुक निवासी अमुक शहर रियासत जम्मू में डाक्टरी के पद पर तैनात हूँ और इस समय सच्चे दिल से क़सम खाकर सरासर नेक नीयती और सच की अभिलाषा से पूर्णत: इक़रार करता हूँ कि अगर मैं इस्लाम के समर्थन में कोई निशान देखूँ जिसका उदाहरण दिखाने में मैं विवश हो जाऊँ और मानवीय शक्तियों में उसका कोई उदाहरण उन्हें तमाम् अनिवार्यताओं के साथ दिखला न सकूँ तो तुरन्त मुसलमान हो जाऊँगा। इस प्रसार और इक़रार की इसलिए आवश्यकता है कि सदैव जीवित रहने वाला और पवित्र ख़ुदा खेल-तमाशे की तरह कोई निशान दिखाना नहीं चाहता। जब तक कोई इन्सान पूरी विनम्रता और सन्मार्ग की इच्छा हेतु उसकी ओर न झुके तब तक वह रहमत की दृष्टि नहीं डालता और प्रकाशित करने से निश्छलपा और दृढ़संकल्प होना होना साबित होता है। चूँकि इस विनीत ने ख़ुदा तआला की सूचनाओं से ऐसे निशानों के प्रकटन के लिए एक वर्ष के वादे पर घोषणा पत्र दिया है इसलिए वही समय सीमा डाक्टर साहिब के लिए

---

① पंजाब गजट सियालकोट, रिसाला अंजुमन हिमायते इस्लाम लाहौर, नाज़िमुल हिन्द लाहौर, अख़बार-ए-आम लाहौर, नूर अफ़्शां लुधियाना

क़ायम रहेगी। सत्य के अभिलाषी के लिए यह कोई बड़ी समय सीमा नहीं। अगर मैं असफल रहा तो डाक्टर साहिब जो सज़ा और ज़ुर्माना मेरे सामर्थ्यानुसार मेरे लिए तय करेंगे वह मुझे स्वीकार है और ख़ुदा की क़सम मुझे पराजित होने की दशा में सज़ाए-मौत से भी कोई परवाह नहीं।

ہماں بہ کہ جاں در رہِ او فشانم　　جہاں را چہ نقصاں اگر من نمانم ①

सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया।

उद्घोषक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

11 जनवरी सन् 1892 ई.

न्यायकर्ताओं के ध्यान देने योग्य

यह बात बिल्कुल सच है कि जब दिल की आँखें बन्द होती हैं तो जिस्मानी आँखें बल्कि सारी ज्ञानेन्द्रियाँ साथ ही बन्द हो जाती हैं। फिर इन्सान देखता हुआ नहीं देखता और सुनता हुआ नहीं सुनता और समझता हुआ नहीं समझता और ज़ुबान पर सच जारी नहीं हो सकता। देखो हमारे मूर्ख मौलवी कैसे बुद्धिमान कहलाकर ईर्ष्या के कारण **नादानी में डूब गए।** धार्मिक दुश्मनों की तरह अन्ततः मनघड़त बातों और आरोपों पर उतर आए। एक साहिब इस विनीत के बारे में लिखते हैं कि अपने एक लड़के के बारे में इल्हाम से ख़बर दी थी कि यह बहुत गुणवान होगा। हालाँकि वह केवल कुछ माह जीवित रहकर मर गया। मुझे आश्चर्य है कि इन जल्दबाज़ मौलवियों को ऐसी बातों के कहने के समय क्यों لَّعۡنَتَ اللّٰہِ عَلَی الۡکٰذِبِیۡنَ (ال عمران:62) ② की आयत

① यही बेहतर है कि मैं अपना जीवन उस की राह में क़ुर्बान कर दूँ अगर मैं न रहूँ तो दुनिया का क्या नुकसान है। (अनुवादक)

② झूठों पर अल्लाह की लानत (धिक्कार) हो। (अनुवादक)

याद नहीं रहती और क्यों अचानक अपने आन्तरिक कोढ़ और इस्लाम की शत्रुता को दिखलने लगे हैं। अगर कुछ शर्म हो तो अब इस बात का सुबूत दें कि इस विनीत के किस इल्हाम में यह लिखा गया है कि वही लड़का जो मर गया वास्तविक रूप से वही लड़का है जिसका वादा दिया गया था। ख़ुदा की ईशवाणी में केवल संक्षिप्त तौर पर ख़बर है कि ऐसा लड़का पैदा होगा। ख़ुदा तआला की पवित्र ईशवाणी ने किसी को संकेत करके इस भविष्यवाणी का पात्र नहीं ठहराया बल्कि फरवरी सन् 1886 ई. के घोषणा पत्र में यह भविष्यवाणी मौजूद है कि कुछ लड़के छोटी आयु में भी मृत्यु पाएँगे। फिर इस बच्चे के मरने से एक भविष्यवाणी पूरी हुई या कोई भविष्यवाणी झूठी निकली। अब फ़र्ज़ के तौर पर कहता हूँ कि अगर हम अपनी राय से अपने किसी बच्चे पर यह सोच भी लें कि शायद यह वही कथित लड़का है और हमारे सोच विचार का परिणाम ग़लत हो जाए तो इसमें ख़ुदा की ईशवाणी का क्या दोष होगा ? क्या नबियों (अवतारों) के सोच-विचार के परिणामों में इसकी कोई मिसाल नहीं। अगर हमने मृत्यु पा जाने वाले लड़के के बारे में कोई निश्चित तौर पर सिद्ध करने वाला इल्हाम किसी अपनी किताब में लिखा है तो वह प्रस्तुत करें। झूठ बोलना और गन्दगी खाना एक बराबर है। आश्चर्य है कि इन लोगों को गन्दगी खाने का क्यों शौक़ हो गया। आज तक सैकड़ों इल्हामी भविष्यवाणियाँ सच्चाई के साथ प्रकट हो चुकी हैं जो एक दुनिया में फैलायी गयीं। परन्तु इन मौलवियों ने इस्लाम की हमदर्दी की राह से किसी एक का भी वर्णन नहीं किया। दिलीप सिंह का हिन्दुस्तान और पंजाब आने में असफल रहना सैकड़ों लोगों को घटित होने से पहले सुनाया गया था। कई हिन्दुओं को पंडित दयानन्द की मौत की सूचना उसके मरने से कई महीने पहले बताई गयी थी और यह लड़का बशीरुद्दीन महमूद जो पहले लड़के के बाद पैदा हुआ, एक घोषणा पत्र में इस के जन्म की पैदा होने से पूर्व ख़बर दी गई थी। सरदार मुहम्मद हयात खाँ के निलम्बन के ज़माने में उनकी पुनः

बहाली की लोगों को ख़बर सुना दी गयी थी। शेख महर अली साहिब रईस होशियारपुर पर मुसीबत का आना समय से पूर्व बता दिया गया था और फिर उनकी रिहाई की ख़बर न केवल उनको समय से पूर्व पहुँचाई गई थी बल्कि सैकड़ों आदमियों में मशहूर की गयी थी। इसी तरह सैकड़ों निशान हैं जिनके गवाह मौजूद हैं। क्या इन दीनदार मौलवियों ने कभी इन निशानों का भी नाम लिया ? जिसके दिल पर ख़ुदा मुहर लगा दे उसके दिल को कौन खोले ? अब भी ये लोग याद रखें कि इनकी दुश्मनी से इस्लाम को कुछ नुकसान नहीं पहुँच सकता। कीड़ों की तरह स्वयं ही मर जाएँगे, परन्तु इस्लाम का नूर दिन प्रतिदिन उन्नति करेगा। ख़ुदा तआला ने चाहा है कि इस्लाम का नूर दुनिया में फैलाए। इस्लाम की बरकतें अब इन मक्खी जैसी आदतें रखने वाले मौलवियों की बक-बक से रुक नहीं सकतीं। ख़ुदा तआला ने मुझे सम्बोधित करके स्पष्ट शब्दों में फ़रमाया है कि:-

اَنَا الفتّاح افتح لك ترى نصرًا عجيباً و يَخِرّون على المساجد ربنا اغفرلنا انا كنا خاطئين جلابيب الصدق فاستقم كما امرت الخوارق تحت منتهى صدق الاقدام كن لِلّٰه جميعًا و مع الله جميعا عسٰى ان يبعثك ربّك مقامًا محمودا

मैं विजय देने वाला हूँ। तुझे विजय दूँगा। एक अजीब मदद तू देखेगा और उनके कई लोग जो इन्कार करने वाले हैं, जिनके भाग्य में हिदायत पाना मुक़द्दर है वे यह कहते हुए अपनी सज्दागाहों पर गिरेंगे कि हे हमारे रब्ब ! हमारे गुनाह क्षमा कर, हम ग़लती पर थे। ये सच्चाई के पर्दे हैं जो खुलेंगे। इसलिए जैसा कि तुझे आदेश दिया गया है धैर्य धारण कर। चमत्कार अर्थात करामात उस अवसर पर प्रकट होते हैं जो सच्चाई पर पहुँचने का चरमोत्कर्ष बिन्दु है। तू पूर्णतः ख़ुदा के लिए हो जा। तू पूर्णतः ख़ुदा के साथ हो जा। ख़ुदा तुझे उस स्थान पर उठाएगा जिसमें तेरी प्रशंसा की जाएगी और एक ईशवाणी में कई बार कुछ शब्दों के अन्तर से फ़रमाया कि मैं तुझे प्रतिष्ठा दूँगा और बढ़ाऊँगा और तेरे निशानों में बरकत रख दूँगा, यहाँ तक कि बादशाह तेरे

कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे। अब हे मौलवियो! हे कृष्ण स्वभाव रखने वालो! अगर साहस है तो ख़ुदा तआला की इन भविष्यवाणियों को टालकर दिखाओ, हर प्रकार के धोखे से काम लो और कोई चाल उठा न रखो। फिर देखो कि अन्ततः ख़ुदा तआला का हाथ विजयी होता है या तुम्हारा।

सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया।

सचेत करने वाला सदुपदेशक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मीर अब्बास अली साहिब लुधियानवी

چو بشنوی سخن اہل دل مگو کہ خطاست　　　سخن شناس نۂ دلبرا خطا اینجا است①

यह मीर साहिब वही हज़रत हैं जिनकी शुभचर्चा मैंने इज़ाल: औहाम के पृष्ठ 790 में बैअत करने वालों के समूह में लिखी है। अफ़सोस कि वह भ्रम पैदा करने वाले लोगों की भ्रमित बातों से बड़ी डगमगाहट में आ गए बल्कि दुश्मनों की जमाअत में दाखिल हो गए। कुछ लोग आश्चर्य चकित होंगे कि उनके बारे में तो इल्हाम (ईशवाणी) हुआ था कि:-

اصلها ثابتٌ وفرعها فی السمآء

इसका जवाब यह है कि इल्हाम का अर्थ केवल इतना है कि उसकी जड़ क़ायम है और आसमान में उसकी शाख है। इसमें विवरण नहीं है कि वह अपनी मूल प्रकृति की दृष्टि से किस बात पर क़ायम है नि:सन्देह यह बात मानने के योग्य है कि मनुष्य में कोई न कोई प्राकृतिक विशेषता होती है जिस पर वह हमेशा क़ायम और दृढ़ रहता है और यदि एक काफ़िर कुफ़्र से इस्लाम की तरफ आए तो वह प्राकृतिक विशेषता साथ ही लाता है और अगर फिर इस्लाम से कुफ़्र की ओर लौटे तो उस विशेषता को साथ ही ले जाता है क्योंकि अल्लाह की प्रकृति और अल्लाह के सृजन में परिवर्तन और बदलाव नहीं। विभिन्न प्रकार के लोग विभिन्न प्रकार की खानों की भाँति हैं। कोई सोने की खान, कोई चाँदी की खान, कोई पीतल की खान। इसलिए अगर इस इल्हाम में मीर साहिब की किसी प्राकृतिक विशेषता का वर्णन हो जो अपरिवर्तनीय हो तो कुछ आश्चर्यजनक नहीं और न कुछ एतराज़ की बात है। नि:सन्देह यह प्रमाणित विषय है कि मुसलमान तो मुसलमान हैं काफ़िरों

① जब तू दिल वालों की कोई बात सुने तो मत कह उठ कि ग़लत है, तू बात नहीं समझ सकता, ग़लती तो यही है। (अनुवादक)

में भी कुछ प्राकृतिक विशेषताएँ होती हैं और कुछ सदाचार प्राकृतिक तौर पर उनको प्राप्त होते हैं। ख़ुदा तआला ने पूर्णत: अन्धकार में किसी चीज़ को भी पैदा नहीं किया। हाँ यह सत्य है कि कोई प्राकृतिक विशेषता सन्मार्ग प्राप्ति के बिना जिसका दूसरे शब्दों में इस्लाम नाम है, वह आख़िरत (परलोक) की मुक्ति का कारण नहीं हो सकती, क्योंकि सर्वश्रेष्ठ दर्जे की विशेषता ईमान (अर्थात् ख़ुदा पर दृढ़ विश्वास होना) और ख़ुदा को पहचानना एवं सत्य पर चलना तथा ख़ुदा से डरना और दूसरों पर रहम करना है। अगर वही न हुई तो दूसरी विशेषताएँ व्यर्थ हैं। इसके अतिरिक्त यह इल्हाम उस ज़माने का है जब मीर साहिब में साबित क़दमी (दृढ़ता) मौजूद थी। अत्यधिक सच्चा और निष्कपट प्रेम पाया जाता था और अपने दिल में वह भी यही सोचते थे कि मैं ऐसा ही साबित क़दम (दृढ़)रहूँगा। इसलिए ख़ुदा तआला ने उनकी तत्कालीन हालत की ख़बर दे दी। यह बात ख़ुदा तआला की ईशवाणी की शिक्षाओं में प्रचलित और मशहूर है कि वह वर्तमान हालत के अनुकूल ख़बर देता है। किसी के काफ़िर होने की अवस्था में उसका नाम क़ाफ़िर ही रखता है और उसके मोमिन तथा साबित क़दम होने की अवस्था में उसका नाम मोमिन, निष्कपट और साबित क़दम ही रखता है। ख़ुदा तआला की वाणी में इसके बहुत से उदाहरण हैं। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि मीर साहिब दस वर्ष की अवधि तक बड़ी निष्कपटता, प्रेम और साबित क़दमी (दृढ़ता) से इस विनीत के सद्भावकों में शामिल रहे और सच्ची निष्ठा के जोश से बैअत करने के समय न केवल उन्होंने स्वयं बैअत की बल्कि अपने दूसरे परिजनों, सहानुभूति रखने वालों, मित्रों और बाल-बच्चों को भी इस सिलसिले में दाख़िल किया और उस दस वर्ष की अवधि में जितने उन्होंने निष्कपट प्रेम और श्रद्धा से भरे हुए पत्र भेजे उनका इस समय मैं अन्दाज़ा बयान नहीं कर सकता। परन्तु दो सौ के लगभग अब भी ऐसे पत्र उनके मौजूद होंगे जिनमें उन्होंने असीम श्रेणी की विनम्रता और विनीतता से अपने निष्कपट प्रेम और निष्ठा का उल्लेख किया

है। बल्कि कई पत्रों में अपनी वे ख़्वाबें भी लिखी हैं जिनमें मानो आध्यात्मिक तौर पर उनको विश्वास दिलाया गया है कि यह विनीत ख़ुदा की ओर से है और इस विनीत के विरोधी असत्य पर हैं। वह अपने ख्वाबों के आधार पर अपना हमेशा का लगाव प्रकट करते हैं कि मानो वह इस लोक और परलोक में हमारे साथ हैं और ऐसी ही अधिकता के साथ ये ख़्वाबें उन्होंने लोगों में फैलायीं हैं और अपने शिष्यों और सदभावकों को बतायीं। अब स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति ने इतने जोश से अपना निष्कपट प्रेम प्रकट किया ऐसे व्यक्ति की वर्तमान हालत के संबंध में अगर ख़ुदा तआला का इल्हाम हो कि यह व्यक्ति इस समय साबित क़दम है लड़खड़ाया नहीं, तो क्या उस इल्हाम को घटना के विरुद्ध कहा जाएगा। बहुत से इल्हाम केवल वर्तमान हालतों के दर्पण होते हैं विषयों के परिणाम से उनका कोई संबंध नहीं होता और यह बात भी है कि जब तक मनुष्य जीवित है उसके बुरे अन्त पर निर्णय नहीं कर सकते, क्योंकि मनुष्य का दिल ख़ुदा तआला के कब्ज़े में हैं। मीर साहिब तो मीर साहिब हैं अगर वह चाहे तो दुनिया के एक सख़्त पत्थर दिल और बन्द हृदय वाले व्यक्ति को भी एक क्षण में सत्य की ओर फेर सकता है। अतः यह इल्हाम वर्तमान हालत की ओर इशारा करता है अन्तिम परिणाम पर अनिवार्य रूप से इस का इशारा नहीं है और अन्त अभी स्पष्ट भी नहीं है। बहुत से लोगों ने सदात्मा लोगों को छोड़ दिया और घोर शत्रु बन गए लेकिन बाद में कोई क़ुदरत का करिश्मा देखकर पछताए और बिलख-बिलख कर रोए और अपने पाप को स्वीकारा और ईमान लाए। मनुष्य का दिल ख़ुदा तआला के हाथ में है और उस ख़ुदा तआला की आज़माइशें हमेशा साथ लगी हुई हैं। अतः मीर साहिब अपनी किसी अन्दरूनी बुराई तथा अवगुण के कारण आज़माइश में पड़ गए और फिर उस आज़माइश के असर से निष्ठापूर्ण भावावेश के बदले में मनमलिनता पैदा हुई और फिर मनमलिनता से दु:शीलता (बेमुरव्वती) और परायापन और परायापन से धृष्टता (बेबाकी) और धृष्टता से दिल पर

मुहर और दिल पर मुहर से खुली–खुली दुश्मनी और अपमान, उपेक्षा एवं अपमानित करने का इरादा पैदा हो गया। सीख प्राप्त करने की जगह है कि कहाँ से कहाँ पहुँचे। क्या किसी की सोच में था कि मीर अब्बास अली का यह हाल होगा? ख़ुदा तआला जो चाहता है करता है। मेरे मित्रों को चाहिए कि उनके लिए दुआ करें और अपने अवसादग्रस्त और पीछे रह गए भाई को अपनी हमदर्दी से वंचित न रखें। अल्लाह ने चाहा तो मैं भी दुआ करूँगा। मैं चाहता था कि उनके कुछ पत्र नमूने के तौर पर इस किताब में प्रतिलिपित करके लोगों को दिखाऊँ कि मीर अब्बास अली की निष्ठा किस स्तर तक पहुँची हुई थी और किस प्रकार की ख़्वाबें वह हमेशा व्यक्त किया करते थे और किस विनम्रता और सम्मान के शब्दों से वह पत्र लिखते थे परन्तु खेद है कि इस संक्षिप्त पुस्तक में गुंजाइश नहीं। अल्लाह ने चाहा तो किसी अन्य समय में आवश्यकतानुसार लिखा जाएगा। यह मनुष्य के परिवर्तनों का एक नमूना है कि वह व्यक्ति जिसके दिल पर हर समय सच्ची निष्ठा की महानता और धाक छायी रहती थी और अपने पत्रों में इस विनीत के बारे में धरती पर ख़ुदा का ख़लीफ़ा लिखा करता था। आज उसकी क्या हालत है? अतः ख़ुदा तआला से डरो और हमेशा दुआ करते रहो कि वह केवल अपनी कृपा से तुम्हारे दिलों को सत्य पर क़ायम रखे और ठोकर से बचाए।

अपनी साबितक़दमियों (स्थिरताओं) पर भरोसा मत करो। क्या सबितक़दमी (स्थिरता) में कोई **फ़ारूक़** रज़ियल्लाहु अन्हो से बढ़कर होगा? जिन पर एक क्षण के लिए आज़माइश आ पड़ी थी। यदि ख़ुदा तआला का हाथ उनको न थामता तो ख़ुदा जाने क्या हालत हो जाती। मुझे यद्यपि मीर अब्बास अली साहिब को ठोकर लगने से दुःख बहुत हुआ है परन्तु फिर मैं देखता हूँ कि जब मैं हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के रूप में आया हूँ तो यह भी अवश्य था कि मेरे कुछ निष्कपट प्रेमियों की घटनाओं में भी वह नमूना प्रकट होता। यह बात स्पष्ट है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम

के कुछ विशेष मित्र जो उनके जिगरी दोस्त थे, जिनकी प्रशंसा में ख़ुदा की वह्यी (ईशवाणी)भी आ चुकी थी वे अन्ततः हज़रत मसीह से विमुख हो गए थे। यहूदा अस्करयूती हज़रत मसीह का कैसा गहरा दोस्त था जो हमेशा एक ही प्याले में हज़रत मसीह के साथ खाता और बड़ा प्यार दिखाता था। जिसको जन्नत (स्वर्ग) के बारहवें सिंहासन की ख़ुशख़बरी भी दी गई थी। मियाँ पतरस कैसे बुज़ुर्ग हवारी (सहचर) थे जिनके बारे में हज़रत मसीह ने फ़रमाया था कि आसमान की कुंजियाँ उनके हाथ में हैं, जिनको चाहें स्वर्ग में दाख़िल करें और जिनको चाहें न करें। लेकिन मियाँ पतरस महोदय ने जो करतूत दिखलाई वह इंजील पढ़ने वालों पर स्पष्ट है कि हज़रत मसीह के सामने खड़े होकर और उनकी ओर इशारा करके ऊँची आवाज़ से कहा कि मैं इस व्यक्ति पर लानत (धिक्कार) डालता हूँ। मीर साहिब अभी इस हद तक कहाँ पहुँचे हैं ? कल की किसको ख़बर है कि क्या हो ? मीर साहिब के भाग्य में यद्यपि यह ठोकर लिखी हुई थी और أَصلها ثابتٌ (अस्लुहा साबितुन) का स्त्रीलिंग सर्वनाम भी इसकी ओर एक संकेत कर रहा था। परन्तु बटालवी साहिब की भ्रम पैदा करने वाली बातों ने मीर साहिब की हालत को और भी ठोकर में डाला। मीर साहिब एक भोले-भाले व्यक्ति हैं जिनको धर्म के सूक्ष्म विषयों का कुछ भी ज्ञान नहीं। हज़रत बटालवी और उसके अतिरिक्त कुछ दूसरे लोगों ने फूट डालने और उत्तेजित करने वाली तहरीकों (आंदोलनों) से उनको भड़का दिया कि यह देखो अमुक बात इस्लाम के अक़ीदा (आस्था) के विरुद्ध है और अमुक शब्द अपमान का शब्द है। मैंने सुना है कि शेख़ बटालवी इस विनीत के सद्भावकों के बारे में क़सम खा चुके हैं कि मैं ज़रूर उन सबको गुमराह (पथभ्रष्ट) कर दूँगा और इतनी अतिशयोक्ति है कि शेख़ नज्दी का अपवाद भी उनके कथन में नहीं पाया जाता ताकि सदाचारियों को बाहर रख लेते। यद्यपि वह कुछ विमुख हो जाने वाले निष्ठावानों के कारण बहुत खुश हैं परन्तु उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि एक टहनी के शुष्क हो

जाने से सारा बाग़ नष्ट नहीं हो सकता। जिस टहनी को ख़ुदा तआला चाहता है शुष्क कर देता है और काट देता है और उसके स्थान पर फलों और फूलों से लदी हुई दूसरी टहनियाँ पैदा कर देता है। बटालवी साहिब याद रखें कि अगर इस जमाअत से एक निकल जाएगा तो ख़ुदा तआला उसके स्थान पर बीस लाएगा। इस आयत पर विचार करें:-

فَسَوْفَ يَأْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ①

(المائدہ آیت 55)

अन्ततः हम पाठकों पर स्पष्ट करते हैं कि मीर अब्बास अली साहिब ने 14 दिसम्बर 1891 ई. में मुख़ालिफ़त के तौर पर एक घोषणापत्र भी प्रकाशित किया है जो अशिष्टता और अपमान के शब्दों से भरा हुआ है। हमें उन शब्दों से कोई मतलब नहीं। जब दिल बिगड़ता है तो ज़ुबान भी साथ ही बिगड़ जाती है। उस घोषणापत्र की तीन बातों का जबाव देना आवश्यक है।

प्रथमः- यह कि मीर साहिब के दिल में दिल्ली में होने वाले मुबाहसों (शास्त्रार्थों) का हाल घटना के विपरीत जम गया है। इसलिए इस भ्रम को दूर करने के लिए मेरा यही घोषणापत्र पर्याप्त है लेकिन शर्त यह है कि मीर साहिब इसको ध्यानपूर्वक पढ़ें।

द्वितीय :- यह कि मीर साहिब के दिल में पूरी तरह खुली-खुली ग़लती से यह बात बैठ गई है कि मानो मैं एक नास्तिक आदमी हूँ और चमत्कारों का इन्कारी, लैलतुल-क़द्र का इन्कारी, नुबुव्वत का दावेदार, नबियों का अपमान करने वाला और इस्लामी अक़ीदों (आस्थाओं) से मुँह फेरने वाला हूँ। अतः इन भ्रमों को दूर करने के लिए मैं वादा कर चुका हूँ कि निकट ही मेरी ओर से इस बारे में एक स्थायी किताब प्रकाशित होगी। अगर मीर साहिब ध्यानपूर्वक

---

① अल्लाह तआला अवश्य ऐसे लोग ले आएगा जिससे वह मुहब्बत करता होगा और वे उससे मुहब्ब्त करते होंगे और वे मोमिनों पर बड़े हमदर्द और काफ़िरों पर बहुत कठोर होंगे। (अनुवादक)

इस किताब को पढ़ेंगे तो ख़ुदा की तौफ़ीक़ से अपनी निराधार और बेबुनियाद दुर्भावनाओं से बड़ी शर्मिन्दगी उठाएँगे।

तृतीयः- यह कि मीर साहिब ने अपने इस घोषणापत्र में अपनी विशेषताएँ प्रकट करते हुए लिखा है कि मानो उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दर्शन कराने की सामर्थ्य है। अतः वह इस घोषणापत्र में इस विनीत के बारे में लिखते हैं कि इस संबंध में मेरा मुक़ाबला नहीं किया मैंने कहा था कि हम दोनों किसी एक मस्जिद में बैठ जाएँ और फिर या तो मुझ को रसूल करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दर्शन कराकर अपने दावों को प्रमाणित करा दिया जाए या मैं दर्शन कराकर इस संबंध में निर्णय करा दूँगा। मीर साहिब के इस लेख ने न केवल मुझे ही आश्चर्य में डाला बल्कि हर एक जानकार अत्यन्त आश्चर्य में पड़ रहा है कि अगर मीर साहिब में यह सामर्थ्य और विशेषता थी कि जब चाहें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देख लें और बातें पूछ लें बल्कि दूसरों को भी दिखा दें। तो फिर उन्होंने इस विनीत की, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सत्यापन के बिना क्यों बैअत कर ली? और क्यों दस साल तक लगातार निष्कपटता दिखाने वालों के समूह में रहे? आश्चर्य है कि एक बार भी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वल्लम उनकी ख़्वाब में न आए और उन पर स्पष्ट न किया कि इस झूठे, मक्कार और अधर्मी की क्यों बैअत करता है और क्यों अपने आप को गुमराही में फँसाता है? क्या कोई बुद्धिमान समझ सकता है कि जिस व्यक्ति को यह शक्ति प्राप्त हो कि बात-बात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास चला जाए और उनके आदेशानुसार काम का पाबन्द हो और उनसे राय मशविरा ले ले, वह दस वर्ष तक लगातार एक अत्यन्त झूठे और धोखेबाज़ के पंजे में फँसा रहे और ऐसे व्यक्ति का अनुयायी हो जाए जो अल्लाह और रसूल का दुश्मन और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपमान करने वाला और

नर्क में गिरने वाला हो। अत्यधिक आश्चर्य की बात यह है कि मीर साहिब के कई मित्र बयान करते हैं कि उन्होंने कुछ ख़्वाब हमारे पास बयान किए थे और कहा था कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा और उन्होंने इस विनीत के बारे में कहा कि वह व्यक्ति सचमुच ख़लीफ़तुल्लाह (अल्लाह का ख़लीफ़ा) और धर्म की बुराइयों को दूर करने वाला है और मीर साहिब ने इसी प्रकार के कुछ पत्र जिनमें ख़्वाबों का बयान और इस विनीत के दावे की तस्दीक़ थी, इस विनीत को भी लिखे। अब एक न्यायकर्ता समझ सकता है कि अगर मीर साहिब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देख सकते हैं तो जो कुछ उन्होंने पहले देखा वह निश्चय ही विश्वास करने योग्य होगा और अगर उन के वे ख़्वाब विश्वास योग्य नहीं और शैतानी ख़्वाबों में शामिल हैं तो ऐसे ख़्वाब भविष्य में भी विश्वास के योग्य नहीं ठहराए जा सकते। पाठकगण समझ सकते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दर्शन कराने का सामर्थ्यपूर्ण दावा करना कितनी व्यर्थ बात है। हदीस सहीह से स्पष्ट है कि शैतान के साक्षात रसूल के भेष में प्रकट होने से रसूल को देखने का वही ख़्वाब पवित्र और सही हो सकता है जिसमें आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उनकी हुलिया पर देखा गया हो, नहीं तो नबियों के भेष में शैतान का प्रकट होना केवल सत्य ही नहीं बल्कि घटनाओं में से है। लानती (धुत्कारा हुआ) शैतान तो ख़ुदा तआला की आकृति और उसके सिंहासन की झलका भी दिखा देता है तो फिर नबियों के भेष में उसका प्रकट होना उस पर क्या मुश्किल है। अब जबकि यह बात है, अगर मान लें कि किसी को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दर्शन हुए तो इस बात पर कैसे संतुष्ट हों कि वह दर्शन वास्तविक रूप से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही है क्योंकि इस युग के लोगों को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुखाकृति का पूर्णतः ज्ञान नहीं और इसके अतिरिक्त हुलिया पर शैतान

का प्रतिरूपित होकर प्रकट होना वैध और साबित है। अत: इस युग के लोगों के लिए सच्चे और वास्तविक दर्शन की सच्ची पहचान यह है कि उस दर्शन के साथ कुछ ऐसे चमत्कार और विशेष लक्षण भी हों जिनके कारण रोया या कश्फ़ (सच्चा ख़्वाब) के ख़ुदा की ओर से होने पर विश्वास किया जाए। उदाहरण स्वरूप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कुछ शुभ सन्देश घटित होने से पूर्व बता दें या कुछ भाग्य की घटित होने वाली बातों को घटित होने से पूर्व बता दें या कुछ दुआओं की क़ुबूलियत के द्वारा पहले से सूचना दे दें या क़ुरआन करीम की कुछ आयतों के ऐसे गूढ़ रहस्य और अर्थ बता दें जो पहले लिखे और प्रकाशित न हुए हों, तो नि:सन्देह ऐसा ख़्वाब सही समझा जाएगा। अन्यथा अगर एक व्यक्ति दावा करे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे ख़्वाब में आए हैं और कह गए हैं कि अमुक व्यक्ति पक्का काफ़िर और दज्जाल (धोखेबाज़) है तो अब इस बात का निर्णय कौन करे कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कथन है या शैतान का या स्वयं उस ख़्वाब देखने वाले ने चालाकी से यह ख़्वाब अपनी तरफ से घड़ ली है। अगर मीर साहिब को वास्तव में यह क़ुदरत हासिल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके ख़्वाब में आ जाते हैं तो हम मीर साहिब को यह तकलीफ़ देना नहीं चाहते कि वह अवश्य हमें दिखा दें। बल्कि वह अगर अपना ही देखना सिद्ध कर दें और उपरोक्त वर्णित चार लक्षणों के द्वारा इस बात को प्रमाणित कर दें कि वास्तव में उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा है तो हम स्वीकार कर लेंगे। लेकिन अगर उन्हें मुक़ाबले का ही शौक है तो उस सीधे तौर पर मुक़ाबला करें जिसका हमने इस घोषणापत्र में उल्लेख किया है। हमें व्यवहारिक तौर पर उनके रसूल के दर्शन में ही आपत्ति है फिर कैसे उनके रसूल के दर्शन कराने के दावे को स्वीकार किया जाए। आज़माइश का पहला तरीक़ा तो यही है कि मीर साहिब रसूल के दर्शन करने के दावे में सच्चे हैं या झूठे। अगर सच्चे हैं

तो फिर अपनी कोई ख़्वाब या कश्फ़ प्रकाशित करें जिसमें यह वर्णन हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दर्शन हुए और आपने अपने दर्शन के लक्षण अमुक-अमुक भविष्यवाणी और दुआ की क़ुबूलियत और गूढ़ रहस्यों का खुलना बयान किया। फिर इसके बाद रसूलुल्लाह के दर्शन कराने को आमंत्रित करें। यह विनीत सच के समर्थन के उद्देश्य से इस बात के लिए भी हाज़िर है कि मीर साहिब रसूल के दर्शन कराने का चमत्कार भी दिखाएं। क़ादियान में आ जाएँ, मस्जिद मौजूद है, उनके आने-जाने और खान-पान का सारा ख़र्चा इस विनीत के ज़िम्मे होगा। यह विनीत समस्त पाठकों पर स्पष्ट करता है कि यह केवल गपबाज़ी (डींग) है वह कुछ नहीं दिखा सकते। अगर आएँगे तो अपने दोष प्रकट कराएँगे। बुद्धिमान सोच सकते हैं कि जिस व्यक्ति ने बैअत की, अनुयायियों की जमाअत में दाख़िल हुआ, दस साल से लगातार इस विनीत को ख़लीफ़तुल्लाह (अल्लाह का ख़लीफ़ा) इमाम और मुजद्दिद (धर्म की बुराइयों को दूर करने वाला, सुधारक) कहता रहा और अपनी ख़्वाबें बताता रहा, क्या वह इस दावे में सच्चा है? मीर साहिब की हालत बहुत ही अफ़सोस के लायक़ है। ख़ुदा उन पर रहम करे। भविष्यवाणियों की प्रतीक्षा करते रहें जो प्रकट होंगी। इज़ाला औहाम के पृष्ठ 855 को देखें। इज़ाला औहाम के पृष्ठ 635 और 396 को ध्यानपूर्वक पढ़ें। 10 जुलाई 1887 ई. के घोषणापत्र की भविष्यवाणी की प्रतीक्षा करें जिसके साथ यह भी इल्हाम है:-

ويسئلونك أَحق هو قل اى وربى انه لحق وما انتم بمعجزين زوجنا كها لا
مبدل لكلماتى وان يروا اٰية يعرضوا ويقولوا سحر مستمر

अनुवाद:- तुझ से पूछते हैं कि क्या यह बात सत्य है। कह, हाँ मुझे अपने रब्ब की क़सम है कि यह सत्य है और तुम इस बात को घटित होने से रोक नहीं सकते। हमने स्वयं उससे तेरा निकाह कर दिया है। मेरी बातों को कोई बदल नहीं सकता और वे निशान देखकर मुँह फेर लेंगे और स्वीकार नहीं

करेंगे और कहेंगे कि यह कोई पक्का धोखा या पक्का जादू है।

۱۱-۱۵-۲۳-۱-۲۸-۲-۲۶-۲-۲۷-۲-۱۴-۲۷-۲۸
۱۱-۱۴-۳۴-۱۱-۱۶-۴۷-۲۷-۲۸-۱-۱۰-۱۴-۲۷-۲-۱
۱-۱۰-۱۴-۲۳-۷-۱۴-۱۱-۳۴ ۲۳-۳۴-۵-۱-۷
۲-۱۴-۱-۵-۷-۱-۲-۷-۱۴-۱-۱۶-۱۱-۳۴-۷-۱-۳۴-۷-۲۸-۵-۱۴
۷-۱-۲۸-۲-۱۴

उस पर सलामती हो जिसने हमारे रहस्यों को समझा और हिदायत का अनुसरण किया।

सदुपदेशक हितैषी

विनीत

ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

27 दिसम्बर 1891 ई.

28—27—14—2—27—2—26—2—28—1—23—15—11

1—2—27—14—10—1—28—27—47—16—11—34—14—11

7—1—5—34—23—34—11—14—7—23—14—10—1

14—5—28—7—34—1—7—34—11—16—1—14—7—2—1—7—5—1—14—2

14—2—28—1—7

सूचना

इस विनीत के सिलसिला-ए-बैअत में दाख़िल होने वाले समस्त सद्भावकों पर स्पष्ट हो कि बैअत करने से तात्पर्य यह है कि दुनिया की चाहत ठण्डी हो और अपने ख़ुदा और प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत दिल पर छा जाए और दुनिया की मोह-माया से ऐसी दूरी पैदा हो जाए कि परलोक की यात्रा बुरी न लगे, परन्तु इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संगति में रहना और अपनी आयु का एक भाग इस राह में व्यतीत करना आवश्यक है ताकि अगर ख़ुदा तआला चाहे तो किसी अति सच्चे विश्वसनीय प्रमाण के देखने से ईमान की कमज़ोरी, हीनता और सुस्ती दूर हो और पूर्ण विश्वास पैदा होकर पूरी रुचि, रसिकता और जोशीली मुहब्बत पैदा हो जाए। अतः इस बात के लिए हमेशा सोचना चाहिए और दुआ करना चाहिए कि ख़ुदा तआला यह सामर्थ्य दे और जब तक यह सामर्थ्य प्राप्त न हो कभी-कभी अवश्य मिलना चाहिए क्योंकि सिलसिला-ए-बैअत में दाखिल होकर फिर मुलाक़ात की परवाह न रखना, ऐसी बैअत पूर्णतः कल्याणरहित और केवल एक रस्म के तौर पर होगी। चूँकि शारीरिक दुर्बलता या खर्च की कमी या यात्रा की दूरी के कारण हर एक के लिए यह संभव नहीं हो सकता कि वह संगति में आकर रहे या साल में कई बार कष्ट उठाकर मुलाक़ात के लिए आए। क्योंकि अधिकतर दिलों में अभी ऐसी जोशीली मुहब्बत नहीं कि मुलाक़ात के लिए बड़े-बड़े कष्टों और बड़े-बड़े नुकसानों को बर्दाश्त कर सकें। इसलिए उचित मालूम होता है कि साल में तीन दिन ऐसे जलसे के लिए निर्धारित किए जाएँ, जिसमें अगर ख़ुदा तआला चाहे तो तमाम् निष्ठावान स्वस्थ और फुर्सत होने के साथ-साथ कोई बड़ी रुकावट न होने पर निर्धारित तिथियों पर हाज़िर

हो सकें। इसलिए मेरे विचार में उचित है कि वह तिथि 27 दिसम्बर से 29 दिसम्बर तक निर्धारित हो, अर्थात आज के दिन के बाद जो 20 दिसम्बर सन् 1891 ई. है भविष्य में अगर हमारे जीवन में 27 दिसम्बर की तिथि आ जाए तो यथाशक्ति समस्त मित्रों को केवल अल्लाह के लिए रब्बानी बातों को सुनने के लिए और दुआ में शामिल होने के लिए इस तिथि पर आ जाना चाहिए। इस जलसे में ऐसे सच्चे गूढ़ रहस्य और मा'रिफ़त के सुनाने का काम रहेगा जो ईमान और विश्वास और आध्यात्म ज्ञान को बढ़ाने के लिए ज़रूरी हैं। इसके अतिरिक्त उन मित्रों के लिए विशेष दुआयें और ध्यान होगा और यथाशक्ति अति दयालु ख़ुदा के समक्ष दुआ की जाएगी कि ख़ुदा तआला उनको अपनी ओर खींचे और अपने लिए उनको स्वीकार करे और उनमें पवित्र बदलाव पैदा करे। एक अस्थाई लाभ उन जलसों में यह भी होगा कि हर एक नए साल में जितने नए भ्राता इस जमाअत में दाख़िल होंगे वे निर्धारित तिथि पर हाज़िर होकर अपने पहले भ्राताओं के मुँह देख लेंगे और इसके बाद आपस में प्रेमभाव और जान-पहचान का रिश्ता बढ़ता रहेगा। उन दिनों में जो भ्राता देहान्त पा जाएगा उसके लिए उस जलसे में मुक्ति की दुआ की जाएगी और तमाम् भ्राताओं को आध्यात्मिक तौर पर एक करने के लिए उनके रूखेपन और परायापन और फूट को बीच से उठा देने के लिए ख़ुदा तआला के समक्ष दुआ की जाएगी, इस रूहानी जलसे में और भी कई रूहानी फ़ायदे होंगे जो इंशाअल्लाह कभी-कभी ज़ाहिर होते रहेंगे। सामर्थ्यहीन लोगों के लिए उचित होगा कि अगर पहले ही से इस जलसे में हाज़िर होने की सोचें और उपाय और बचत करके कुछ थोड़ा-थोड़ा पैसा सफ़र ख़र्च के लिए प्रतिदिन या माहवार जमा करते जाएँ और अलग रखते जाएँ तो आसानी से सफ़र ख़र्च सुलभ हो जाएगा मानो यह सफ़र मुफ़्त हो जाएगा। अति उत्तम होगा कि लोगों में से जो लोग इस राय को स्वीकार करें वे मुझ को अभी अपनी विशेष तहरीर के द्वारा सूचना दें ताकि एक अलग सूची में उन समस्त लोगों के नाम सुरक्षित

रहें। सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार निर्धारित तिथि पर हाज़िर होने के लिए अपनी आगामी ज़िन्दगी के लिए प्रण कर लें और तन-मन से दृढ़ संकल्प के साथ उपस्थित हो जाया करे सिवाए ऐसी हालत के कि ऐसी रुकावटें आ जाएँ जिनमें यात्रा करना अपनी शक्ति से बाहर हो जाए, अब जो 27 दिसम्बर सन् 1891 ई. को धार्मिक मंत्रणा हेतु जलसा किया गया, इस जलसे पर जितने लोग केवल अल्लाह की बातें सुनने के लिए यात्रा का कष्ट उठाकर हाज़िर हुए ख़ुदा उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और उनके हर एक क़दम का पुण्य उनको दे। आमीन पुनः आमीन।

ASMANI FAISLA

(IN HINDI)

By

Hadhrath Mirza Ghulam Ahmad
The Promised Messiah and the Imam Mahdi(as)